### तृतीय अध्याय

#### हिमाचल प्रदेश की लोक-गायिकाओं का जीवन परिचय

<table>
<thead>
<tr>
<th>नंबर</th>
<th>लोकगायिका</th>
<th>नाम</th>
<th>जिला</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>3.1</td>
<td>लोकगायिका श्रीमती गम्बरी देवी</td>
<td>बिलासपुर</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>3.2</td>
<td>श्रीमती कमला देवी ठाकुर</td>
<td>बिलासपुर</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>3.3</td>
<td>श्रीमती राज प्रभाकर</td>
<td>चम्बा</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>3.4</td>
<td>श्रीमती वर्षा कटोच</td>
<td>कांगड़ा व हमीरपुर</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>3.5</td>
<td>श्रीमती निर्मला शर्मा (नीरू चांदनी)</td>
<td>कुट्टू एवं लाहौल</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>3.6</td>
<td>कुमारी हेमावती</td>
<td>किन्नौर</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>3.7</td>
<td>श्रीमती कली चोहान</td>
<td>मंडी</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>3.8</td>
<td>श्रीमती रविकान्ता कश्यप</td>
<td>मंडी</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>3.9</td>
<td>श्रीमती बसन्ती देवी</td>
<td>शिमला</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>3.10</td>
<td>श्रीमती लीला शर्मा</td>
<td>शिमला</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>3.11</td>
<td>श्रीमती रेणु भारद्वाज</td>
<td>शिमला</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>3.12</td>
<td>स्व. रोशनी देवी</td>
<td>सोलन</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>3.13</td>
<td>स्व. कमला रानी छाबड़ा</td>
<td>सोलन</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>3.14</td>
<td>श्रीमती उमा कौशल</td>
<td>सोलन</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>3.15</td>
<td>श्रीमती युवा शर्मा</td>
<td>सोलन</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>3.16</td>
<td>श्रीमती जयवन्ती चोहान</td>
<td>सिरमौर</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>3.17</td>
<td>श्रीमती विद्या देवी</td>
<td>सिरमौर</td>
<td></td>
</tr>
</tbody>
</table>
तृतीय अध्याय

हिमाचल प्रदेश की लोक-गाथियों का जीवन परिचय

संगीत जीवन की आत्मा है। इस कथन से इस बात का सत्यस्वरूप हमारे सामान्यन उज्जागर होता है कि संगीत मानव जीवन के साथ गहराई तक जुड़ा हुआ है। कोई भी मानव हृदय इससे घृणा या दूर रहने की कल्पना भी नहीं कर सकता। नाद अथवा ध्वनि का स्वही समबन्ध हमारी हृदय गति से होता है। इसी नाद पर सम्पूर्ण संगीत भी आधारित है। प्रकृति के नियमानुसार माता के गर्म से जन्म लेते ही बच्चा नाद उत्पन्न करता है। यथा नाद रहता ही उसके भावी जीवन का अभिषेक अंग बन जाता है।

मनुष्य जहां जन्म लेता है उसे वहां की मिटटी से गहन लगाव रहता है। उसी प्रकार उसे वहां की लोक संस्कृति, भाषा तथा लोकसंगीत से भी अदृश्य लगाव रहता है। लोक संगीत एक अत्यन्त ही भावान्तरक व रोचक संगीत होता है। कोई भी मनुष्य बले ही संगीत के नियमों से परिचित न हो लेकिन व लोक संगीत से अनमिज नहीं रह नकल किया क्योंकि यह लोक की भावानाओं व लोक संस्कारों से जुड़ रहता है। स्वयं से अनमिज व्यक्ति भी जब लोक गीत की गुणगुणात्मक एवं वादक लोक वाद्य पर ताल छोड़ता है तो स्वतः ही पांच थिरकने लगते हैं व असीम आनंद की अनुभूति होती है। लोक संगीत में भाषा, शास्त्र व पाणिडल आदि गुणों का कोई बनन नहीं होता अप्रति इसमें जनसाधारण की रूढ़ियां व भावानाएं विद्यमान रहती हैं। जनमानस के लिए लोक संगीत, लोक विख्यातों, पीठ-पीठजों, धार्मिक मन्त्रों व परम्पराओं पर निर्भर करता है।

कलाकार के बिना किसी भी कला के अर्थत्त की कल्पना मात्र भी नहीं की जा सकती। किसी भी कला के प्रचार-प्रसार के लिए एक कलाकार का होना अत्यन्त आवश्यक है। यह सत्यविद्या है कि कलाकार किसी भी कला को आधार व संस्कार प्रदान करता है। कला एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी के हस्तांतरित होती रहती है। हस्तांतरण भी यह अनवरत प्रक्रिया सदियों से लोक में चली आ रही है।
'पहाड़ी राज्य 'हिमाचल प्रदेश' आरम्भ से ही उत्कृष्ट लोक कलाकारों की जनसंख्या रहा है। प्रदेश में गम्भीरी देवी, पं. ज्योति प्रसाद, हेतुराम तनवर, हेतुराम कैंथा, डॉ. रामस्वरूप शाहिल (हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय), उमा कुंशल, रव. रोशनी देवी, कली चौहान, गोपाल सिंह ठाकुर, अक्षर सिंह परमार, कृष्ण लाल सहगल, परसराम तोमर, कमला रानी, विधानाधीन सरेक, प्रेम प्रकाश निहालचंद, निर्मला शर्मा (नीरु चौदनी), रविकान्ता कुस्मा, बसन्ती देवी, विद्या देवी, राज प्रभाकर आदि बहुत से ऐसे कलाकार हुए हैं जिन्होंने अपने अथवा प्रयासों से अपनी लोक संस्कृति को प्रदेश व देश भर में प्रचारित-प्रसारित करके इसे नए आयाम प्रदान किये।'" इन्हीं लोक कलाकारों में से हिमाचल प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों से महिला लोकगाथाओं को विशेष रूप में चुनकर शोधार्थी, शोधकार्य 'हिमाचल प्रदेश की लोकगाथाओं का सांस्कृतिक योगदान' के अन्तर्गत विभिन्न लोकगाथाओं के सांस्कृतिक जीवन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालने के लिए दृढ़ संकल्प है।

---

"सांस्कृतिक विवरण – डॉ. राम स्वरूप शाहिल, हिमाचल विश्वविद्यालय (सांगीतिक विभाग)"

42
3.1 लोकगाथिका स्थान गम्भरी देवी

"लोकगाथिका श्रीमती गम्भरी देवी जी का जन्म हिमाचल प्रदेश के जिला बिलासपुर के बन्दला नामक गांव में 1920 के दशक में हुआ। इनकी माता श्रीमती शान्ति देवी व पिता श्री गर्दितु राम इनके जन्म से अत्यंत ही प्रसन्न हुए। चार बेटों में सबसे बड़ी बेटी गम्भरी देवी माता-पिता के लिए किसी वरदान से कम नहीं थी। जन्म के ही समय पिता ने बेटी के भविष्य के बारे में स्थानीय ज्योतिष से सम्पर्क किया तो उन्होंने कहा कि आपकी बेटी आपने वाले समयमें माता-पिता के साथ पूरे इलाके का नाम रौशन करेगी व आपने वाले समय में चार भाई और पैदा होंगे। यह सब जानकर माता-पिता का स्नेह अपनी बेटी के प्रति और अधिक प्रमाण होता गया। चूँकि गम्भरी देवी जी के पिता उस समय की मशहूर गुम्मा मण्डली में गाते बजाते थे अतः संगीत इहें विरासत से ही मिला। माता-पिता की लड़की बचपन से ही इनके साथ विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रमों में जाने लगी। विवाह आदि कार्यक्रमों में विभिन्न प्रकार के गीतों पर नृत्य करने के साथ ही साथ गम्भरी देवी लोक गीतों को गुलनगाने भी लगी।

इसी प्रकार इनके सांगीतिक जीवन की नींव पड़ी। चूँकि रवासत कालिन समय में लड़कियों की शिक्षा का प्रचार नहीं था अतः इन्हें कभी भी बच्चीय पढ़ाई का अवसर नहीं मिला। परन्तु फिर भी इन्होंने कभी इसे अपनी कभी नहीं बनाने दिया। धीरे-धीरे समय बीतता गया एवं संगीत के प्रति इनका लगाव गहरा होता गया। चूँकि उस समय गाने बजाने वाले को आजाद कहा जाता था तथा महिलाओं का इस प्रकार के कार्यों में भाग लेना अत्यन्त दृष्टि से नहीं देखा जाता था। अत: गम्भरी देवी जी को भी इस तरह के सामाजिक विरोध का सामना करना पड़ा। परन्तु फिर भी इन्होंने अपना सांगीतिक
सफर जारी रखा। एक समय यह बता उस समय के राजा आनन्द चन्द्र के दरबार में पहुंच गई। राजा ने उन्हें अपने दरबार में बुलाया भेजा। उस समय गम्भीर मात्र 14 वर्ष की थीं। राजा ने उनसे गापन व नृत्य को बन्द करने को कहा तो गम्भीर देवी जी ने मना कर दिया। अतः राजा ने उनसे शादी न करने की बात कह दी कि जब तक स्वयं ही तुम्हारा विवाह किसी ने न हो जाए तब तक तुम शादी नहीं करोगी। इस पर गम्भीर देवी जी ने कहा कि मुझे सिर्फ गाने व नाचने का शौक है अतः मैं इस कारण लिए विवाह का विचार नहीं करती। संगीत के प्रति इनका अद्भूत लगाव देख राजा आनन्द चन्द्र ने इन्हें प्रोत्साहन के तौर पर उस समय पांच रूपये ईनाम दिया तथा यह भी कहा कि आप अपने इस शौक को आगे बढ़ाएं व आपका कोई भी व्यक्ति विवाह नहीं करेगा। इसके बाद तो जैसे इन्हें नई संजीवनी मिल गई तथा इन्होंने और उत्साह से गाना व नाचना जारी रखा। परंतु लोगों के विरोध के कारण गम्भीर जी की माता इन्हें शादी-विवाह आदि कार्यक्रमों में जाने से रोकने लगी क्योंकि वो नहीं चाहती थी कि मेरी बेटी को कोई आजाद कहे। परंतु फिर भी गम्भीर जी ने अपना संगीतिक सफर जारी रखा।”

"पारिवारिक विवाह के बारे में बताते हुए गम्भीर जी कहती हैं कि "जब भी कभी गाँव में कोई कार्यक्रम होता था तो गांव वाले कहते थे कि गम्भीर देवी को बुलाओ। इससे उनका काम ही होता था जैसे किसी के घर पर शादी होती थी तो बहुत शेर मेहमान आए होते थे। अतः लोग सोचते थे कि गम्भीर के गाने व नाच के लिए लोग विना बिस्तर के ही सारी-सारी रात बैठकर गुजार देंगे व उन्हें इस प्रकार उनके सोने-टहरने की व्यवस्था से निजात मिल जाएगी। साथ ही दूसरी तरफ गम्भीर देवी भी अपने गाने-नाचने के लगाव के कारण घर वालों से छुपकर घर की खिड़की से निकलकर सारी-सारी रात कार्यक्रमों में भाग लेने लगी। इसी प्रकार साध ही भीतता गया व गम्भीर देवी दूर-दूर तक प्रसिद्ध होने लगी।"
अपने विचारिक जीवन के बारे में बताते हुए गम्भरी जी कहती है, “भगवान ने कुछ ऐसे संयोग मिलाए कि व हरी बसन्ता पहलवान के सम्पर्क में आई। सूक्ति के बसन्ता पहलवान बहुत मशहूर थे अत: जब कभी कोई दंगल (छींज) बंदला में होती थी तो बसन्ता जी वहां आते थे। शाम को छींज बाद गांव में सांस्कृतिक कार्यक्रम था जहां पर उन्होंने गम्भरी को गाते व नाचते देखा। वह स्वयं भी संगीत के शौकीन थे। अत: संगीतिक सवाल-जवाब के अंतर्गत बसन्ता जी सवाल पूछने लगे व गम्भरी जी ने गायन व गीत के माध्यम से जवाब देना शुरू किया। इस प्रकार लगभग 18 सवालों का दौरा चला।

इसके उपरान्त दोनों एक दूसरे से काफी प्रभावित हुए तथा इस्तीफा देने एक दूसरे के साथ जीवन बिताने का फैसला लिया। अत: 1940 के दशक में गम्भरी जी (२२ वर्ष की आयु में) बसन्ता पहलवान के साथ जिला विलासपुर के ही दुम्हरा (धूपगड़ी) नामक गान में आकर जीवन यापन करने लगी। परस्तु विवाह के आठ वर्ष तक कोई औलाद न होने के कारण गम्भरी जी ने स्वयं अपनी पति का दूसरा विवाह करवाया व अपनी सौतन को अपनी बहन के तरह रखा। बसन्ता पहलवान की दूसरी पत्नी से उन्हें तीन लड़के व दो लड़कियां मिली। जिनमें से एक बेटी बचपन में ही मर गई। बाकी सारे बच्चों को गम्भरी ने अपने सारे बच्चों की तरह पाला-पोसा।

जीवन साथी के साथ व होस्ते के कारण गम्भरी देवी के सांगीतिक जीवन को और ज्यादा प्रोत्साहन मिला व उनकी प्रसिद्ध प्रेमदास से निकल कर राष्ट्रीय स्तर तक पहुँच गई। वर्तमान में गम्भरी देवी किसी पहलवान की मोहताज नहीं है। परस्तु लगभग 90 वर्ष की आयु में आज अपने आपको अपने पति व बहन जैसी सौतन के बिना पाकर भावुक हो उठती है। गम्भरी जी कहती है कि लगभग 12 वर्ष पहले उनके पति उनका साथ छोड़ परमात्मा में लीन हो गए व उनके बाद उनकी सौतन भी उन्हें छोड़कर ग्रामु को पहुँची हो गई। अपने पति के बारे में बताती हुई वह कहती है कि वह एक बड़े दिल व हिम्मत वाले व्यक्ति थे जिन्होंने सामाजिक विरोध के वापसी भी मेरी कला को
संगीत के क्षेत्र में अमृतपुर्ण योगदान के लिए गम्भरी देवी जी को विभिन्न पुरस्कारों व अनुदानों से नवाजा गया। जैसे- बिलासपुरी लोकसंस्कृति की नायिका-गम्भरी, अप्रैल 2005 व 2006 में युवातन संस्कृति संरक्षण कार्यशाला में प्रशिक्षक की भूमिका, हिमाचल कला संस्कृति भाषा अकादमी की तरफ से कला सम्मान हिमाचल प्रदेश सरकार द्वारा 2009 में प्रेरणा स्त्रोत सम्मान पुरस्कार, राष्ट्रीय संगीत नाटक अकादमी टैगॊर पुरस्कार, मई 2012, लाइफ टाइम अवैवमेंट पुरस्कार फरवरी 2012 (दिव्य हिमाचल रिलीफ फंड से) आदि विभिन्न सम्मानों से गम्भरी देवी जी को नवाजा जा चुका है।1

प्रस्तुत विवरण श्रीमती गम्भरी देवी जी ने शोधकर्ता को जुलाई मह 2012 में प्रदान किया। प्रस्तुत संयोगवश वर्ष 2013 के जनवरी मह में पहले हफ्ते में शारीरिक अस्थायी के कारण उनका निधन हो गया। यह हिमाचल संस्कृति के लिए एक बहुत बड़ा घाटा है।

---

1 सामाजिक विवरण – लोक गायिका श्रीमती गम्भरी देवी
3.2 श्रीमती कमला देवी ठाकुर

"लोकगाथिका श्रीमती कमला देवी जी का जन्म हिमाचल प्रदेश के जिला बिलासपुर में 20 दिसम्बर 1958 में हुआ। उनकी माता श्रीमती हरदेवी देवी व पिता श्री बड़ा राम पुराने बिलासपुर (अब जलमगन हो गया है) के ही स्थान पर निवासी थे। परन्तु सतलुज नदी पर भाग्य बंग से निरीक्षण के कारण अपना शहर जलमगन हो गया। अतः वे 1959 के दशक में बिलासपुर के घास में रामकर्म स्थान से 10 किलोमीटर दूर गोड़ी सरगना नामक गांव में आकर स्थाई रूप से निवासित हो गए। चूँकि कमला देवी उनकी इकलौती बेटी थी। अतः माता-पिता का विशेष सन्तह उन्हें प्राप्त हुआ। कमला देवी जी ने स्कूली पढ़ाई के अंतर्गत भाषात्मक शिक्षा स्थानीय पाठशाला से ही की। चूँकि उस समय लड़कियों को पढ़ाई का कोई विशेष प्रवास नहीं था। अतः वह आपूर्ति की पढ़ाई नहीं कर पाई। परन्तु बचपन से ही अपने क्षेत्र व रिस्टेंडारी में विभिन्न अवसरों पर सांगीतिक कार्यक्रमों के आयोजन में इन्हें अपने माता-पिता के साथ लोकगीतों को सुनने का मौका मिला। अतः यहीं से इन्हें गाने की रूचि पनपने लगी।

जैसे-जैसे समय बीतता गया वैसे-वैसे विभिन्न सांगीतिक अवसरों पर इन्होंने स्वयं भी लोकगीत गाना शुरू कर दिया। इसी दौरान इनका विवाह मात्र 15 वर्ष की आयु में सन् 1973 में गोड़ी नामक स्थान पर ही श्री रामलाल ठाकुर जी के साथ हो गया। चूँकि कमला देवी शादी, विवाह, बच्चे का जन्म व राज्य कीर्ति आदि अवसरों पर स्थानीय क्षेत्र व अपनी रिस्टेंडारी में ही कार्यक्रमों में भाग लेती थी। अतः इन्हें किसी भी प्रकार के सामाजिक विरोधाभास का सामना नहीं करना पड़ा।

सांगीतिक जीवन के विषय में बताते हुए कमला-जी कहती है कि उनके गाने के शोक को उनके परिवार व निकट सम्बन्धियों ने भी प्रोत्साहित किया। विशेषकर उनके
पति ने उन्हें इस प्रकार के सांस्कृतिक अवसरों में भाग लेने के लिए हमेशा ही प्रोत्साहित किया। हालांकि इनके पति S.S.B. में Sub Inspector के पद से सेवानिवृत्त हैं।

तो भी नौकरी के दौरान जब वह छुट्टी पर घर आते थे तो उन्हें स्वयं लेकर इस प्रकार के अवसरों में सम्मिलित होते थे। इस प्रकार समय के साथ-साथ कमला देवी को स्थानीय क्षेत्र व रिश्तेदार सांस्कृतिक अवसरों पर भाग लेने के लिए विशेष प्रकार से बुलाने लगे। विशेष कर विवाह, बच्चे के जन्म व जात्रा आदि धार्मिक अवसरों पर कमला देवी की उपस्थिति को विशेष समझा जाने लगा। चूँकि कमला देवी जी ने पारम्परिक संस्कार गीतों व धार्मिक गीतों को संजो कर रखा व स्वयं की भी कई रचनाएं संप्रभु हिंदी की हैं। अतः विलासपुर गिर्दा को पारम्परिक रूप से संजोकर रखने में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका मानी जाती है।

पारिवारिक रूप से कमला देवी जी के एक बेटी व दो बेटे हैं। जिनमें से उनके एक सपुत्र पंजी कश्मीर सिंह, दिनांकार प्रदेश विश्वविद्यालय से संगीत में शी.एच.डी. कर चुके हैं व राष्ट्रीय में महाविद्यालय में संगीत प्रवक्ता पद पर कार्यरत हैं साथ ही इनकी पत्नी कल्यक में शिक्षा प्राप्त है।

चूँकि कमला देवी जी ने अपनी कला को मचनीय नहीं अपने क्षेत्र विशेष तक ही सीमित रखा है। फिर भी विलासपुर पारम्परिक संस्कार गीतों को विशेष संकल्प हेतू इन्हें शोध विषय के अन्तर्गत रखा गया है।"
3.3 श्रीमती राज प्रमाकर

"बम्बा लोक गायन में श्रीमती राज प्रमाकर
का नाम किसी पहचान का मोहताज नहीं है। इनका
जन्म जिला कांगड़ा के पालमपुर में गांव में 23
अक्टूबर 1968 को हुआ। इनके पिता श्री हरि सिंह
व माता श्रीमती लीला देवी ने बेटी के जन्म को
भगवान का आशीर्वाद समझ कर इनका लालन-पालन किया। श्रीमती प्रमाकर की दो
छोटी बहनें व एक भाई भी हैं। बचपन से ही इन्हें गाने का शौक रहा। रेडियो पर
लोकगीतों को सुन-सुन कर इन्होंने अपनी प्रतिमा को निखारना शुरू कर दिया था
साथ ही इन्होंने अपने स्कूली पढ़ाई के दौरान ही स्थानीय सांस्कृतिक कार्यक्रमों में गाना
शुरू कर दिया था। सामाजिक रूप से इस दौरान इन्हें लोगों के भारी विरोध का
सामना भी करना पड़ा। अतः इनके परिवार को समाज ने बिरादरी से बेदखल भी कर
दिया। क्योंकि उस समय लड़कियों व औरतों का इस प्रकार से घरों से निकलकर
गायन-वादन व नृत्य नाट्य करना निखेज माना जाता था। परंतु सामाजिक विरोध की
परवाह न करते हुए श्रीमती प्रमाकर के माता-पिता ने इन्हें लोक गायन के लिए हमेशा
प्रोत्साहित ही किया।

सन् 1984 में 15 वर्ष की आयु में जब श्रीमती राज प्रमाकर मात्र 9वीं कक्षा में
पढ़ रही थी उसी समय रेडियो की तरफ से आए अधिकारियों ने इनका घर पर ही
Audition लिया। तब से लेकर श्रीमती राज प्रमाकर ने अपना सांगीतिक सफर जारी
रखा है। अपने इस सांगीतिक सफर के दौरान इन्होंने बहुत से मंचों पर अपनी कला
का जादू विकेशा।

एक बार श्रीमती राज प्रमाकर जलनपार दुर्दर्शन में Recording के लिए गई हुई
थीं। उसी दौरान उनके मित्रों के माध्यम से उनकी मुलाकात एक ऐसे व्यक्ति से हुई जो
आगे चलकर उनके जीवन साथी बने। 1988 ई. में श्रीमती राज प्रभाकर का विवाह स्व. श्री नरेंद्र कुमार शर्मा जी से हुआ। श्री नरेंद्र कुमार शर्मा उस समय वायू सेना जालावधि में M.E.S. Engineer के पद पर तैनात थे। इस प्रकार श्रीमती राज प्रभाकर ने अमृतसर की कांग्रेस कलोनी, मकान नंबर 43 में अपने ससुराल में गृह प्रवेश किया। चूंकि श्री नरेंद्र कुमार शर्मा आयु में उनसे काफी बड़े थे व पहले से विवाहित थे। परन्तु पहली पत्नी के निधन के कारण वह अकले थे। उनके पहले से एक 1/2 साल की बेटी भी थी। परन्तु श्रीमती राज प्रभाकर जो कि बचपन से सामाजिक मुख्यालय से हटकर कुछ अलग करने की चाह रखती थी। उन्होंने सामाजिक विरोध की परवाह किए बिना सहज ही इस जिम्मेदारी को निभाने का पौधा कर लिया। ससुराल पश्चि में तरफ से भी इन्हें लोक गायन को आगे बढ़ाने का प्रोत्साहन मिला। अतः इन्होंने सांगीतिक सफर जारी रखने का ही पौधा किया। श्री नरेंद्र जी की बेटी को समी माँ का प्यार देकर उन्होंने अपने महान व्यक्तित्व का परिचय दिया। इस प्रकार समय बीतने के साथ उन्हें एक बेटे की भी प्राप्ति हुई। जो वर्तमान में Auckland में Royal Business की पढ़ाई कर रहे हैं।

अपने जीवन के संघर्ष काल का विवरण करते हुए प्रभाकर जी कहते हैं कि उन्होंने कभी भी परिस्थितियों के समक्ष घुटने नहीं देकर न ही उन्होंने कभी सामाजिक गतिशील योग नहीं की। उन्होंने हमेशा अपने दिल की आवाज सुनी व आगे बढ़नी रही। इस दौरान विवाह जैसा अहम पौधा भी उन्होंने इसी आवाज को सुनकर किया। उनके पति श्री नरेंद्र कुमार शर्मा जी एक महान व्यक्तित्व रहे। 1965 ई. में उन्होंने उस समय के राष्ट्रपति श्री राजेंद्र प्रसाद जी से अपनी सेवाओं के लिए राष्ट्रपति पद का भी प्रार्थना किया था। उन्होंने जीवन के हर क्षेत्र में श्रीमती राज प्रभाकर का सहयोग व प्रोत्साहन किया। परन्तु विधि के विधान में कुछ और ही लिखा था। जीवन के जिस मोड पर एक जीवन साथी की ज्यादा आवश्यकता होती है उसी समय श्रीमती प्रभाकर जी के पति 7 सितम्बर 2010 को यह संसार छोड़कर परमात्मा में लीन
हो गए। परन्तु फिर भी प्रभाकर जी ने प्रकृति की इस प्रथा के आगे झुकने की बजाए अपनी जिम्मेवारियों को सहजता व हिम्मत के साथ निभाने को ही अपने भावी जीवन का लक्ष्य माना।

आज प्रभाकर जी हिमाचल प्रदेश की लोक संस्कृति में चम्बा लोक संगीत की एक प्रसिद्ध लोकगाथिका के रूप में स्थापित है। अपनी इस लोकप्रियता का क्षेत्र श्रीमती राज प्रभाकर आकाशवाणी को प्रभावित से देती है। जिसके कारण ही उन्हें देश, प्रदेश में पहचान मिली। इसके कारण ही हिमाचल प्रदेश के पर्यटन विभाग ने 1999 ई. में श्रीमती प्रभाकर जी की फोटो का एक कैलेंडर भी जारी किया। श्रीमती प्रभाकर जी का जन्म चूँकि कांगड़ा जिला में हुआ है। परन्तु उनके पूर्वज चम्बा जिला के भरमौर के स्थाई निवासी थे। वहां से वह बहुत समय पहले कांगड़ा चले आए थे। परन्तु वाप. दादा से चम्बा संस्कृति की विरासत को ही उन्होंने अपनी लोकगाथिकी के लिए चुना। आज चम्बा संस्कृति के प्रतिनिधि के तौर पर अपने आपको पाकर श्रीमती प्रभाकर अत्यन्त ही गवानित अनुभव करती है। उनके द्वारा गाया गया चम्बा का "हुण दो कलाई जो नसदा धूँड़ेया" अर्थस्त ही उनकी कर्णप्रिय आयाज के प्रति आम लोक में समान के भाव पैदा कर देता है।"'

1 साकारकृत विवरण – लोक गाथिका श्रीमती राज प्रभाकर
3.4 श्रीमती वर्षा कटोच

"पारंपरिक कांगड़ा लोक संगीत को राज्य व राष्ट्रीय स्तर पर नई ऊंचाईयाँ व पहचान दिलाने में श्रीमती वर्षा कटोच का योगदान अतुलनीय है। श्रीमती वर्षा कांगड़ा लोक गायिकी में एक जानी मानी गायिका है। इसका जन्म 6 फरवरी 1972 को कंगड़ा जिले में स्थित 'झिंकड़' नामक गांव में हुआ, जिसे 'Tea Estate झिंकड़' के नाम से भी जाना जाता है। इसके पिता स्व. श्री नरेश चन्द्र कटोच (आर्मी सेवानिवृत्त) व माता श्रीमती गोतमा देवी हैं। परिवार में एक भाई व चार बहनों के बाद बेटी वर्षा का जन्म हुआ। अतः माता-पिता के साथ बड़े भाई-बहनों के लाड़ प्यार के साथ में वर्षा जी का लालच-पालन हुआ। इसका विवाह वर्ष 2011 में भारत के श्री पंकज पंडित जो कि दैनिक मास्कर में Crime Reporter के पद पर तैयार है के साथ सम्पन्न हुआ। कंगड़ा जिला में एक उच्च वर्ष (कटोच) से सम्बन्धित होने के कारण शुरुआती जीवन में वर्षा जी व उनकी बहनों को कई प्रकार की पारंपरिक बन्दियों से गुजरना पड़ा। क्योंकि उस समय महिलाओं व लड़कियों का घरों से बाहर ज्यादा आना-जाना व काम करना अक्सर नहीं समझा जाता था। परन्तु समय अवधिनिकता के प्रभाव में साथ-साथ कई सारे सामाजिक परिवर्तन होने लगे व लोगों का महिलाओं के प्रति नजरिया बदलने लगा। चूँकि वर्षा जी की बड़ी बहनों की स्कूली पढ़ाई मात्र 12वीं कक्षा तक ही हुई है। परन्तु परिवार में सबसे छोटी व लड़ली होने के कारण इन्हें पढ़ाई को आगे बढ़ाने में अपने बड़े भाई श्री विजय चन्द्र कटोच जी का काफी सहयोग मिला। इसके साथ ही एक नई वर्षा कटोच का सांस्कृतिक जीवन भी धीरे-धीरे परवरण चढ़ने लगा। शैलिक पूर्व से वर्षा जी ने एम.ए. व बी.एड. की पढ़ाई धर्मशाला गहराविधालय से उत्तरी तिथि की है।
सांस्कृतिक रूप से बचपन से ही रेडिया सुनने-सुनने स्वत: ही गाने का शौक वर्षा जी के मन में पैदा हुआ। शैक्षणिक जीवन के दौरान इन्होंने स्कूल और कॉलेज स्तर पर धीरे-धीरे सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेना शुरू किया। सामाजिक रूप से इन्हें कई प्रकार के विरोधाभासों का सामना करना पड़ा। जैसे लोगों ने कहना शुरू किया कि इस प्रकार से लड़की का बाहर निकल कर लोगों में उजाड़-बेदाम गलत है और इससे बाकी घरों की लड़कियों पर भी इसका गलत प्रभाव पड़ेगा। साथ ही उस समय लड़कियों और महिलाओं का घरों से बाहर निकलकर इस प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेना अच्छी नजर से नहीं देखा जाता था। परंतु इस सब की परवाह किए बगैर व विश्वसनीय सहयोग व विशेषज्ञों के कारण वर्षा कटोर अपने सांस्कृतिक सफर की नई ऊंचाइयों को छुपने के लिए कूलसंक्षेप बनी रही।

अपने इसी सफर के दौरान वर्षा जी वर्ष 1992 में गुड़ा मंच से जुड़ी और अपनी प्रतिमा को निखारने में अर्पण रही। चूंकि बचपन से ही रेडियो में विभिन्न लोकगायकों को सुन-सुन कर वर्षा जी ने अपने आपको इस क्षेत्र में एक पहचान दिलाने का मन बना लिया था। अतः वर्ष 1993 से लेकर 1995 तक इन्होंने रेडियो स्टेशन धर्मशाला में उद्घोषक, नाटक और गायन आदि के Audition दिए और सफल रही। तब से लेकर आज तक वर्षा जी रेडियो के साथ जुड़ी रही हैं। इस दौरान इन्होंने कई मंचों पर अपनी प्रतिमा का जलवा बिखेया है। वर्ष 2001 से वे Mid Himalayan Water Shed Development Project, Dharamshala, H.P. में Sr. Facilitator के पद पर भी कार्यरत हैं। साथ ही वर्षा जी ने Shimla Radio से Grade-II कलाकार भी है। जिसका Audition इन्होंने वर्ष 2008-2009 में दिया था।

अपने सांस्कृतिक जीवन के दौरान इन्होंने कई मंचों पर अपनी प्रतिमा का लोहा मनवाया। इन्होंने Summer Festival Dharamshala, कुल्लू दशहरा, लबि, शिवरात्री (मण्डी), नल्लाडी (बिलासपुर) आदि कई मंचों पर अपने कार्यक्रम दिया। इस दौरान इन्होंने साथी कलाकार निशा सिपाहि, करनेल राणा आदि के साथ कई कार्यक्रम
प्रस्तुत किए। साथ ही इन्होंने मशहूर लोकगायक कर्नैल राणा के साथ ‘रुल कुंठ’ नामक कैंसेट भी निकाली जिसे काफी प्रसिद्धि मिली।

अपनी इसी प्रसिद्धि के कारण वर्ष 1993 से लेकर इन्होंने रौकों सीडी.. कैंसेट्स को अपनी आवाज दी। इन्होंने M.G. Tandon, (M.C.C.) के अन्तर्गत अपनी अधिकार कैंसेट्स प्रचारित की। इन्के द्वारा गाई गई ‘घोबन’ नामक कैंसेट तो इतनी प्रचलित हुई कि उसने प्रसिद्धि के सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए जिससे वर्ष कटोरा को प्रदेश ही नहीं अपनिस्य राष्ट्रीय स्तर पर भी पहचान मिली। वर्ष 1994 में धर्मशाला कॉलेज की तरफ से All India Level के Competition में इन्हें Best Entertainer का समान मिला।

वर्ष 2008–2009 में स्वयं सेवी संस्थाओं ने इन्हें इनके सांस्कृतिक योगदान के लिए सम्मानित किया। Rotary Club Dharamshala की तरफ से 1993 में भी इन्हें सम्मानित किया गया। वर्ष 2012 की 25 फरवरी को इन्हें Mid Himalayan (कलकत्ता) की तरफ से इनके सांस्कृतिक योगदान के लिए समान मिला दिया गया।

श्रीमती वर्षा कटोरा जी की लोकप्रियता के कारणों में सबसे अधिक उनकी लोकगायकी व रंगकृति के प्रति स्वभाविक सम्मानजनक भावनाएं ही रहीं। साथ ही उनकी अपनी अधक मेहनत व लाभ के कारण ही उन्हें इतनी प्रसिद्धि मिली। जूरी उन्होंने संगीत की किसी तूफान की शिक्षा ग्रहण नहीं की है फिर भी लोक संगीत के प्रति उनका सम्मान व अख्तीर समझ ने ही उन्हें नई ऊंचाईयों पर पहुँचाया है। रेडियो ने जहां इन्हें शुरुआती प्रभावशाली मंच दिया तो वही दूसरी ओर M.G. Tandan (M.C.C.) ने उन्हें सीडी. कैंसेट्स में गाने का अवसर प्रदान किया। इसके कारण इन्होंने ‘घोबन’ जैसी कैंसेट्स में गाकर देश, प्रदेश में अपना व अपनी लोकसंस्कृति का लोहा उतारा।

नेहुरु युगा केन्द्र, खेल विभाग व Mid Himalyan Water Shed आदि किया गया के साथ जुड़ कर इन्होंने अपनी अथक लाभ व कठोर परिश्रम का परिचय दिया। इससे एक बात निकल कर सामने आती है कि यदि मानव को अपना लक्ष्य पता हो व उसे प्राप्त करने की उसमें लाभ हो तो कुछ भी नाममुकिन नहीं होता। इसी का एक जीता जागता
उदाहरण है श्रीमती वर्षा कटोच। वर्तमान में इन्होंने वर्ष 2010–2011 में 'मौसम बहारा' नामक कैसेट भी प्रस्तुत की है।

अपनी इस सफलता का श्रेय वर्षा जी अपने कॉलेज के अध्यापक श्री प्रत्यूष गुलेशी जी को देती हैं। जिनके मार्गदर्शन के कारण उन्हें सी.डी. व कैसेट्स में गाने का अवसर प्राप्त हुआ। वर्तमान में कलाकारों के सम्मान व मेहनताने में हो रहे शोषण के कारण इन्होंने अकेले ही अपने कार्यक्रम प्रस्तुत करने का निर्णय लिया है। क्योंकि इनका मानना है कि किसी भी कार्यक्रम में प्रस्तुति करने हेतू जो कार्यक्रम दिलाने वाले विचारियों होते हैं वो कलाकार को उपयुक्त धन न देकर स्वयं का फायदा करते हैं। वर्तमान में इनके पति श्री पंकज पंढित इनके लिए विभिन्न संस्कृतिक मंचों पर कार्यक्रम प्रस्तुत करने के अवसर प्राप्त करने हेतू प्रयत्नशील रहते हैं। लोकसंस्कृति व गायिकी के प्रति वर्षा कटोच जी का समर्पण हमें इसी बात से दिख जाता है कि वह वन विभाग में नौकरी के साथ ही साथ रेडियो में आकार्षक उद्घोषक व लोक गायन जैसे कार्यक्रमों में भी जुड़ी हुई है साथ ही साथ विभिन्न जगहों पर भी अपने कार्यक्रम देने के लिए भी तत्पर रहती हैं। इनकी यही लगन व कड़ी मेहनत सभी लोक कलाकारों के लिए एक मिसाल कायम करती है।”

---

1 साक्षात्कृत दिवरण – लोक गायिका श्रीमती वर्षा कटोच
3.5 श्रीमती निर्मला शर्मा (नीरू चांदनी)

"श्रीमती निर्मला शर्मा का जन्म 14 अक्टूबर 1974 ई को कुल्लू जिला के कटराई नामक स्थान पर हुआ। इनके पिता श्री वीरचन्द शर्मा व माता श्रीमती मदनी देवी को दो बेटियों के उपरांत तीसरी बेटी के रूप में श्रीमती निर्मला देवी प्राप्त हुई। परिवार में सबसे छोटी बेटी को नाम मिला निर्मला। प्यार से सभी उन्हें नीरू के नाम से पुकारने लगे।

केवल बेटियों के जन्म के समय इनके माता-पिता ने शायद ही कभी यह सोचा होगा कि उनकी छोटी सी नीरू आगे चलकर अपने माता-पिता ही नहीं बल्कि अपने क्षेत्र का भी नाम रोशन करेगी। वचनपन से ही बेटी नीरू सबकी चहेती रही। स्कूली दिनों के दौरान विभिन्न प्रकार के स्कूली कार्यक्रमों में नीरू हिस्सा लेने लगी। अध्यापकों के प्रोत्साहन से छोटी सी नीरू ने अपनी स्वर्णहरियों को आयाम देना आरम्भ किया। उनकी प्रतिभा से विशेष रूप से प्रभावित होकर इनके ही गांव के श्री प्रीतम जी ने पहचाना और उन्हें निरंतर गाने के लिए प्रोत्साहित किया। नीरू प्रीतम जी को भाई कहकर पुकारती थीं। उन्होंने नीरू को स्वर-ताल का ध्यान रखकर गाने के लिए प्रोत्साहित किया। धीरे-धीरे यह प्रोत्साहन नीरू को गाने के लिए निरंतर प्रेरित करता रहा।

धीरे-धीरे नीरू बड़ी हुई तो माता-पिता ने इनका विवाह लाहील-सिपतिक के एक गांव के श्री सोमदेव जी से सम्पन्न करवाया दिया। यह शायद उनके लिए एक सोचना ही सावित हुआ। उनके पति स्वयं संगीत (विशेषकर लोक गीत) को पसंद करते थे। अतः अपनी पत्नी की प्रतिभा को प्रोत्साहित करते हुए उन्होंने हमेशा ही नीरू को गाने के लिए प्रोत्साहित किया। जीवन साधना का साथ पाकर तो जैसे नीरू की प्रतिभा को नई दिशा ही मिल गई। अतः उन्होंने निरंतर सांस्कृतिक कार्यक्रमों में अपनी आवाज की
स्वरलहरियाँ विखेना आरम्भ कर दीं। इसी कड़ी में उन्होंने वर्ष 1993 में शिमला रेडियो से B-Grade कलाकार के रूप में लाहोली लोकगीत गाने आरम्भ किये। यह नीरू के लिए एक सुनहरा अवसर साबित हुआ। धीरे-धीरे नीरू की प्रतिभा उनके क्षेत्र में विख्यात लगी। वर्तमान में नीरू जी शिमला रेडियो से B-High कलाकार के तौर पर अपनी बहुआयामी प्रतिभा को चुंबू और फैला रही है।

अपने इस सांगीतिक सफर के दौरान वर्ष 2006–2007 में उन्होंने कुल्लू के प्रसिद्ध Studio के मालिक श्री एस.डी. कश्यप जी के सौजन्य से अपनी प्रथम Audio Cassetts साहित्य निकाली। जो कि लाहोली लोकगीतों पर आधारित है। इससे उन्हें सम्पूर्ण लाहोल क्षेत्र में एक विशेष पहचान मिली। इसके अलावा इन्होंने लाहोली लोकगीतों की अन्य Audio Cassetts जैसे साहित्य 2009 (एस.डी. कश्यप, कुल्लू), सोनिमा 2008 और सारांश नामक कैंसेट 2010 में निकाली। इस प्रकार उन्होंने लाहोली पारम्परिक गीतों का संरक्षण व प्रसार प्रदान कर अपने लिए विशेष प्रसिद्धि अर्जित की।

अपनी बहुआयामी प्रतिभा का परिवर्तन देते हुए श्रीमाती निर्मला शर्मा उर्फ नीरू ने कुल्लूवी लोकगीतों की भी कई कैंसेटें जैसे डॉल्स पे चांस, तुम से मिलकर, व नच्च बिन्दु आदि में अपनी आयाज देकर कुल्लू लोकगीतों को वाणिज्य पहचान दिलाई।

अपनी बढ़ती प्रसिद्धि के ही कारण श्रीमली निर्मला शर्मा जी को लोगों ने नाम दिया ‘नीरू चांडनी।’ नीरू चांडनी हिमाचल लोक संगीत में एक अहम व प्रसिद्ध नाम है। जिन्होंने अपने क्षेत्र के साथ-साथ पूरे हिमाचल को अपनी आकर्षक स्वर लहरियों का दीवाना बना रखा है। नीरू चांडनी की प्रतिभा के आयामों का इस बात से पता चलता है कि आज उनको सुनने वाले लोग हिमाचल ही नहीं अपितु देश भर में विद्यमान हैं। इसके अलावा नीरू चांडनी जी ‘सूचकार कला संगम’ कुल्लू के सौजन्य से भारत से बाहर Oman नामक देश में भी अपने लोकसंगीत को प्रस्तुत कर चुकी हैं।

नीरू चांडनी की इसी प्रतिभा से प्रभावित होकर कुल्लू जिला के एक Studio मालिक श्री कमलेश जी ने गायत्री मन्त्र को इज़राइली भाषा में अनुवाद करवाकर उसे
नीरू जी की आवाज में रिकार्ड किया जो कि चांदनी जी के जीवन का एक रोचक अनुभव रहा।

अपने सांगीतिक जीवन के दौरान नीरू चांदनी जी ने संगीत से समाक्षित कोई विशेष शिक्षा नहीं ली अपनेपति के प्रोत्साहन से व श्री एस.डी. कर्मयो जी के मार्गदर्शन से इन्होंने अपनी आवाज को मंचवशीलता प्रदान की। इसके अलावा इन्होंने विभिन राजनीतिक कलाकारो से कुछ न कुछ संगीत विशेषताएं स्तंभ ही अर्जित की। जैसे प्रसिद्ध गायक 'राठी' जी से मंच प्रस्तुति के विभिन्न आयाम सीखे। धीरज शर्मा (लोकगायक) से सुर-ताल के विषय में बारीकियों की जानकारी प्राप्त की व स्तंभ ही इन्हें अपने कला में समाहित करती चली गई।

चर्चा में नीरू चांदनी हिमाचल के हर बड़े-छोटे मंच पर अपनी प्रतिभा को विख्यात चुकी हैं। विभिन्न मंचों के अत्यंत समूह के रेंजका मेले का छोड़कर नीरू चांदनी प्रदेश के हर जिले के छोटे-बड़े मंच पर अपनी सांगीतिक स्वरलहिरियां विख्यात चुकी है। इन्होंने हिमाचली लोक गायकों में राठी, धीरज शर्मा, करनेल साणी, संजीव दीक्षित, सुरेश शर्मा, विक्की चौहान, कुलदीप शर्मा आदि कलाकारों के साथ कई मंचों पर कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

इसके अलावा नीरू चांदनी कुल्लू व लाहोल-स्थिति की एक मात्र ऐसी कलाकारा हैं जिन्होंने जागरणों (धार्मिक कार्यक्रम) के माध्यम से पूरे हिमाचल में अपना एक महत्वपूर्ण स्थान बनाया है। आज देश में हर जगह जागरण हेतु उन्हें बुलाने वालों का तांता लगा रहता है। 'मौं भक्तेश्वरी' नामक जागरण पार्टी के सांविधान इन्होंने हिमाचल के हर छोटे-बड़े क्षेत्र में अपनी एक विशेष पहचान बनाई है।"'

1 साउकूट विवरण – लोकगायका श्रीमती नर्मदा शर्मा
3.6 कुमारी हेमावती

लोकगायका कुमारी हेमावती का जन्म हिमाचल प्रदेश के जिला किन्नौर की रीवा तहसील में 11 जनवरी, 1971 ई को ५० श्री गुणमिति एवं श्रीमती होलमा छारिंग के घर में हुआ। बड़े भाई इन्द्र लाल के बाद हेमावती के जन्म से घर में खुशहाली का माहौल बना। उनके जन्म के उपरात नन्ने भाईयों व दो बहनों का जन्म हुआ। अपने परिवार के साथ खुशहाल जीवन बिताने के लिए पिता श्री गुणमिति जी ने सरकारी नौकरी बीच में ही छोड़कर घर पर रहकर कृषि कार्य करने को प्राथमिकता दी।

पारिवारिक रूप से हेमावती जी को एक खुशहाल व समीति प्रिय परिवार मिला। पिता के साथ—साथ बड़े भाई श्री इन्द्रलाल जी काफी समीतिप्रिय व्यक्ति थे। अतः वे हमेशा ही अपनी छोटी बहन हेमा को गाने के लिए प्रेरित करते रहते थे। इस प्रकार जीवन मधुरता से बीतता रहा। चूँकि किन्नौर जिला एक पहाड़ी दुर्गम क्षेत्र है। अतः कई प्रकार का सामाजिक पिछड़ा पन धारा पर होना स्वाभाविक ही था। गहिराओं की शिक्षा व जीवन की स्थिति जनपद में सच्चायी ही बनी हुई थी। इसी रुढ़िवादिता का शिकार कहीं न कहीं हेमावती को भी बनना पड़ा। अत: इन्हें कभी भी स्कूल जाने का अवसर नहीं मिला।

इस प्रकार शैक्षणिक रूप से हेमावती को विद्यालयी शिक्षा का कोई अवसर नहीं मिला। परन्तु फिर भी परिवार में खुशहाल वातावरण होने के कारण उन्हें इस प्रकार की कभी कभी अहसास नहीं हुआ। सांस्कृतिक रूप से हेमावती जी को एक महत्वपूर्ण मंच रेडियो के माध्यम से लगभग २० वर्ष पहले मिला। जब स्थानीय क्षेत्र 'कप्तान' के रेडियो हाउस में उस समय के ऑल इंडिया रेडियो शिमला के स्टेशन डायरेक्टर श्री सलीम जी ने एक आवेदन करवाया। इसमें बहुत से कलाकारों के साथ—साथ हेमावती ने भी भाग लिया व सफलता प्राप्त की।

इस उपलब्धि के बारे में बताते हुए हेमा जी कहती हैं कि उस समय उनके बड़े भाई स्वयं श्री इन्द्रलाल शिमला से आई अटाइआई का प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे थे। इसी
दौरान उनकी मुलाकात स्टेशन डेटेक्टर सलीम जी से हुई व दोस्ती हो गई। इसी कारण श्री सलीम जी ने किन्नौर घूमने व वहां पर ओडिशन करने का फैसला भी किया था। तब से लेकर कुमारी हेमावती जी लगातार रेडियो से अपने लोकगीत प्रस्तुत करती आ रही है। वर्तमान में वह बी हाई ग्रेड की लोकगायिका बन चुकी है।

हर इन्सान के जीवन में कोई न कोई संघर्ष का दौर अवश्य आता है। अतः हेमावती जी भी इससे अछूती नहीं रही। पारिवारिक खुशशुमा माहौल को एक समय ऐसी नजर लगी कि लगभग 13-14 वर्ष पहले अचानक पिता के किरदार ने कुमारी हेमावती के मनस्पताल को झकझोर कर रख दिया। इस समय से हेमावती जी अभी पूरी तरह उम्र नहीं पाई थी जिसके कारण उनके बड़े भाई श्री इन्द्राजी श्री का एक ही वर्ष के बाद अचानक निधन हो गया। इस दोहरे सदृश बालों से कुमारी हेमावती का जीवन ही बदल गया।

उनका पारिवारिक रिश्तों के प्रति नजरिया भी बदलने लगी। अतः उन्होंने सवार का विवाह न करने का निर्णय लिया। तब से लेकर कुमारी हेमावती अपने जीवन को सामाजिक सेवा के कार्यों में व्यस्त रखती है। जिस भाई की प्रेमण व प्रोत्साहन से उन्हें प्रादेशिक स्तर पर एक स्वाप्तिक लोकगायिका के रूप में पहचान मिली, वही भाई जब अचानक उन्हें छोड़कर भुगावन का प्यारे हो गए तो उनका अपने क्षेत्र के बाहर सांगीतिक कार्यक्रमों में भाग लेने के प्रति इच्छा बहुत ही कम हो गई।

इस दौरान कुमारी हेमावती स्थानीय स्तर पर सरकारी कर्मचारी का कार्यक्रम से जुड़ी। इस प्रकार सरकार भी उसका राह। इसी कारण में कुमारी हेमावती इस कार्यक्रम की अपने क्षेत्र में अवश्यक भी रही। वर्तमान में कुमारी हेमावती स्थानीय युवक मंडल के साथ भी जुड़ी हैं व इसके माध्यम से विभिन्न सांगीतिक व सामाजिक कार्यक्रमों का नियमित आयोजन करती रहती हैं।

महिलाओं की स्थिति के बारे में विवार प्रकट करते हुए वह कहती हैं कि उनके समाज में भी अन्य क्षेत्रों की ही तरह महिलाओं की शिक्षा व समाज में उनकी अधिक भागीदारी का विरोध ही होता रहा है। सम्मान: इसी कारण वह स्कूली पढ़ाई से बंधित
रही हैं। परन्तु पारिवारिक सहयोग व स्वयं के अच्छे आचरण के कारण उनहें संगीत के क्षेत्र में क्रियाशील बने रहने पर कोई विशेष विशेषज्ञता नहीं ढूँढना पड़ा है।

अपने जीवन में कुछ अवसरों का लाभ न मिल पाने के कारण एमआरमी ने हमेशा ही अपने छोटी भाई बहनों को शिक्षा हेतु प्रोत्साहन दिया है। अतः वर्तमान में उनके ही छोटे भाई श्री प्रभु नेती हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय से संगीत की शिक्षा ग्रहण करके शिमला में ही अपना रिकॉर्डिंग स्टूडियो चला रहे हैं।

अपने सांगीतिक जीवन के दौरान कुमारी हेमावती ने बहुत से C.D.&Cassetts जैसे 'चांशन', 'फौनिश बोशन' आदि के माध्यम से अपने लोकगीतों को प्रचारित करने के साथ-साथ विभिन्न मंचों जैसे – विभागीय रिकॉर्डिंग मेला, लवी मेला, समर फेस्टिवल शिमला आदि पर अपनी आकर्षक आवाज से भ्रोताओं का मनोरंजन किया है।

भारी लोकगायकों की पीढ़ी को संदेश स्वरूप कुमारी हेमावती कहती हैं – 
“अपनी कला की पारस्परिकता की मौलिकता को बनाए रखना हमारा कर्त्तव्य है। अतः सभी कलाकारों को इस ओर ध्यान देना चाहिए।”
3.7 श्रीमती कली चौहान

"श्रीमती कली चौहान का जन्म वर्ष 1965 को जिला गंडी की करसागर तहसील के अंतर्गत पड़ने वाले गांव जगोरी, ग्राम पंचायत समनोट में एक परम्परागत संगीत घराने में हुआ। इनके पिता स्व. श्री दुर्गादास व माता श्रीमती सेतू देवी ने स्वयंवर: बेटी के जन्म के समय यह कभी नहीं सोचा होगा कि उनकी बेटी कली आगे वाले समय में अपने परिवार के साथ-साथ अपने क्षेत्र को भी अपने संगीत के माध्यम से राज्य व राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलायेंगी। परिवार में कली के अलावा दो बहने और एक भाई भी हैं। चूँकि कली का जन्म एक परम्परागत गायक परिवार में हुआ था जिसके सदस्य अक्सर पवार, उत्सवों अनुष्ठानों आदि पर अपनी कलाओं का प्रदर्शन करने के लिए बुलाए जाते रहे हैं। अतः कली में इसका प्रभाव पड़ा शहज बात थी। वह बचपन से ही इस ओर उन्नत होने लगी थी। किशोरावस्था की दीर्घा पर पांव रखते ही उसे भी अपनी कला की महत्वपूर्ण समाज में फैला न स्वीकार करने उसके साथ आने आरम्भ होने लग गए थे। स्कूली शुरूवात के दौरान अध्यापकों के प्रोत्साहन से धीरे-धीरे विद्यालय में सुबह की प्रारंभिक में कली ने गाना जो शुरु किया तो फिर मानो जैसे उनके समान को नए पंख मिल गए। स्कूली शुरूवात के दौरान अध्यापकों के सहयोग से कली को स्कूली खेल-कूद प्रतियोगिताओं में भाग लेने के मौके मिलते रहे। जिससे इनका संगीत के प्रति लगाव व मंच पर प्रस्तुति देने का हौसला धीरे-धीरे बढ़ता ही रहा।

सामाजिक जीवन के निर्वाह में हर इस्तान को किसी न किसी प्रकार के संघर्ष पर सामना करना ही पड़ता है। यहीं दौर कलीजिओं जीवन में आया। पहली बार जब कली स्कूली मंचों से निकल कर स्थानीय मेले के बड़े मंच पर प्रस्तुति के लिए आगे
आई तो वहीं से लोगों ने इनका विशेष करना शुरू कर दिया। इसके इसके पहले स्थानीय क्षेत्र से कोई महिला इस प्रकार के कार्यक्रमों में भाग नहीं लेती थी। साथ ही महिलाओं का इस प्रकार से लोगों के समक्ष मंच प्रस्तुती करना सामाजिक रूप से काफी गलत माना जाता था। अतः लोगों ने इनके चरित्र पर ही दोषारोपण करना शुरू कर दिया। परन्तु इस सबसे अलग कली कुछ अलग व बड़ा करने की चाह को सीने में लिए वेतनवाह निर्देश आपे ही बड़ी गई। इस कार्य में परिवार के सहयोग ने इनके लिए संचालक नैसा कार्य किया। अतः धीरे-धीरे कली की स्वर लहरियां आसपास के क्षेत्रों में भी गुज़रने लग गई। धीरे-धीरे कली की आवाज का जादू लोगों के सिर ढककर बोलने लगा। अब जो लोग कली का शुरू में विशेष कर रहे थे वही सबसे बड़े प्रारंभ सब कर वाह-वाह करने लग पड़े।

यथा कली का सांगीतिक सफर अनवरत नई ऊँचाईयों को छूने लगा। इसी कड़ी में उन्हें एक अभूतपूर्व मंच तब मिला जब 1982 ई. में इन्होंने आकाशवाणी शिमला में लोक गायन का Audition दिया। पहली बार तो इन्हें असफल घोषित किया गया। कली के अनुसार यह भी सामाजिक विशेष के कारण ही हुआ था। परन्तु फिर भी उन्होंने अपना होशसान बनाए रखा व एक बार पुनः Audition देने का प्रयास किया। इस बार उनका Audition लेने दिल्ली से एस. शही जी आये थे। सर्वजनिक उन्होंने कली को अपने क्षेत्र के 'नैनं' गाणे को कहा। फिर बिना ताल के भाग गाने व बाद में नाटी गाकर कली ने एस. शही को झूमने पर विराज कर दिया। गाना सुनने के बाद एस. शही ने कली से कहा कि तू आज तक कहां छुप कर बैठी थी और किस मूर्ख ने तुझे असफल किया है। इस तरह कली चौहान को अपने जीवन का सबसे बड़ा मंच रेडियो मिला। फिर तो जैसे कली फूल बन दर तरह महकने लगी।

अपने गाने का पहली रिकार्डिंग का विवेक करना हुए कलीकेकाहिं हैं, 'उस स्त्री में शिमला रेडियो में रिकार्डिंग करने अपने पिता के साथ गई थी। में रिकार्डिंग रूम में गा रही थी तो अन्दर के कमरे से मुझे छोरे पिता व श्री अच्छर सिंह परमार जी
देख व सुन रहे थे। मेरे गाने को सुनते-सुनते मेरे पिता की आंखों में आंसू आ गए।
परमार जी के पूर्वनाम पर पिता बोले कि मुझे नहीं पता था कि मेरी बेटी इतना अच्छा गाती है। इस पर अच्छा जी बोले कि आपकी बेटी इतना अच्छा गाती है कि आपको प्रसन्न होना चाहिए।' इस तरह कली की आवाज रेडियो के माध्यम से देश-प्रदेश भर में गूंजने लगी। उनकी आवाज में वो आकर्षण है कि बरबस ही लोग उनकी आवाज सुनकर सारे काम काज भूलकर उनके गीतों की स्वर रहरियों में खो जाते हैं। इस प्रकार कली ने अपनी आवाज के दम पर 1985 ई. में रेडियो से B-High Grade भी प्राप्त कर लिया।

कहते हैं कि भगवान भी कभी-कभी इस्लाम की हिमात व कर्माट का इम्तहान लेता रहता है। इसी दौरान कली कर्य 1992 ई. में प्रेम-विवाह बन्धन में बंध गई। परन्तु निजी कारणों से व मतभेदों के कारण यह रिस्ता ज्यादा समय तक न चल पाया अतः जल्दी ही इनका अपने पति से सम्बन्ध विच्छेद हो गया। अब जीवन के इस संघर्ष में कलीकी रास्ते में एक और चुनौती आकर खड़ी हो गई थी। परन्तु अपनी हिमात व जुझारू पन का परिचय देते हुए कलीकी अपने अस्तित्व को बरकरार रखने का फैसला किया। अतः सभी प्रकार की मुश्किलों का समाना करे हुए कलीकी अपने आप को समाज में एक मजबूत व्यक्तित्व के रूप में रथापित किया। वर्तमान में कलीकीअपने दो बेटों के साथ करसोग में खुशशाही जीवन वित्त रही है। इतने संघर्ष के बावजूद कली ने एक तरफ तो अपने आप को एक स्थापित कलाकार की पहचान दिलाई तो दूसरी तरफ स्थानीय पंचायत में 2005 से 2011 तक चचायत प्रधान जैसे अहम पद पर रहकर भी लोगों को अपनी कर्मठता व जुझारू पन का परिचय दिया।

हर कलाकार की कला को निखारने व बढ़ावा देने में किसी न किसी का हाथ रहता है। अतः कली चौहान जी बताती है कि “जब वह छठी कक्षा में पढ़ती थी तो उनके अभ्यास श्री विधान्पथी शास्त्री, श्री शंकर लाल गुप्ता व श्रीमती भुवनेश्वरी मेहता उन्हें प्रतिदिन स्कूल की प्रार्थना सभा में भजन व नाटी गाने के लिए प्रोत्साहित करते,
थे। जिसके फलस्वरूप ही कली का संगीत का तरफ रूझान बढ़ा। इसी प्रकार रेडियो न्यूज स्टेशन में कली की गाई वह मंच दिया जिससे उसे छोटे से क्षेत्र से निकालकर प्रदेश व राष्ट्रीय स्तर पर मशहूर कलाकार बना दिया। इसी कड़ी में कई क्षेत्रों ने उनकी बैलेट भी विचारित की जैसे Music Today दिल्ली ने 'हिमाचल के लोकगीत', मध्य अराप हिमाचल प्रदेश ने 'हिमाचल के गीत', 'रुमा-बूमा' मिना, आमर उजाला), छोरू बड़े कलायां (भेजी स्ट्रीट), तेंदू बेद (कुल्लु) आदि।

कली चौहान के विषय में लिखते हुए डॉ. अशोक जेस्थ लिखते हैं, “कली जब भी मंच पर आती है तो समा बंध जाता है। उसकी गाई गई नाटियां बिना नृत्य के ही सारे परिवेश को हुलसा जाती हैं। लोक गायन की लगभग सभी विधाओं में बिना परम्परागत हैं।”

“चूंकि कली चौहान ने बहुत से परम्परागत लोकगीतों के साथ स्वयं की गाई रचनाओं को भी बहुत से गाती हैं। उनकी प्रियिति में सम्भवतः उनकी लोकगीतों व लोक परम्पराओं के साथ सहजस्वित ही सहयोगी है। परन्तु वर्तमान लोक संगीत के बदलते परिदृश्य से खफा रही है कि आज परम्पराओं पर व्यवसायिकतावादी होने के कारण कलाकार लोक संगीत की आत्मा के सही स्वरूप के साथ खिलाड़ कर रहे हैं। यह प्रवृति निरंतर बढ़ती जा रही है जो कि लोक संगीत के लिए धातक है कलाकारों को चाहिए कि वो लोकसंगीत की सहजता को बिना बिगाढ़े उसके परस्परिक स्वरूप को बरकरार रखने में सहयोग दें।”

कली के संगीतिक व्यक्तिवाद का वर्णन करते हुए डॉ. अशोक जेस्थ जी कहते हैं कि कली चौहान से मेरा परिचय बिलासपुर में एक उत्सव के दौरान हुआ था, जहाँ कली के साथ–साथ राज प्रभाकर और पूनम अवस्था तथा पुरुष गायकों में ज्वाला प्रसाद, अच्छर सिंह परमार आदि ने आकाशवाणी के मंच से अपनी प्रस्तुतियाँ दी थीं।

---
1 सामाजिक विवरण – लोक गायिका श्रीमती कली चौहान
2 पजामके, 26 अगस्त, 2006, पृष्ठ-11
3 सामाजिक विवरण – लोक गायिका श्रीमती गम्भरी देवी
सुषमा चौहान की आवाज में वो दम था कि चलती हुई भीड़ थम गई थी। उसी रोज़ \footnote{कंजाब केसरी, 26 अक्टूबर 2006, पृष्ठ-11} में उसे कह दिया था कि थोड़ा रियाज़ करने की जरूरत है फर्नुआ आवाज़ तो ईशारीय देन है उसे बिहारने की जरूरत नहीं तो वह हमस पड़ी थी। अथा अपने जीवन काल के दौरान कली ने कई मंचों जैसे कुल्लू दशहरा, शिवरात्रि (मण्डी), चित्तर्गढ़ में रणुका मेला तथा, मंगोल, Summer Festival Shimla, नालाबाड़ सुदरमगर नालाबाड़ (बिलासपुर), आदि पर अपने स्वर लहरियाँ बिखरी हैं साथ ही कली ने प्रदेश से बाहर, पं. बंगाल, दिल्ली आदि राज्यों में भी अपने कार्यक्रम दिखाया हैं। इस दौरान इन्होंने बहुत से प्रसिद्ध लोक कलाकारों जैसे कृष्ण सहगल, अच्छर सिंह परमरार, पं. ज्वाला प्रसाद, श्रीमती बसंती देवी, रव. रोशनी देवी, हेटराम तनव, मोहन राठौर आदि के साथ कई मंचों पर कार्यक्रमों का प्रस्तुतिकरण किया है।\footnote{लक्ष्याकृति विवरण – लेख गायिका श्रीमती कली चौहान}
3.8 श्रीमती रविकान्ता कस्यप

'हिमाचल लोक गायन क्षेत्र में श्रीमती रविकान्ता कस्यप जी का एक सम्पन्न जनक स्थान है। रविकान्ता जी का जन्म एक ब्राह्मण परिवार में 4 जून 1961 ई. में जिला बिलासपुर में हुआ। इनके पिता श्री स्थाय लाल शर्मा व माता श्रीमती कमला शर्मा जी के परिवार में तीन भाईयों की इकलौती बहन रविकान्ता का वचन बड़े लाडू प्यार से बीता। श्रीमती रविकान्ता जी का मायका मंडली जिला के भर्गी नामक स्थान पर था। पारिवारिक रूप से बचपन से ही इन्हें गाने-बजाने का सांगीतिक माहौल मिला। अतः संगीत के प्रति रुचि होना स्वभाविक था। इनके ताऊ जी श्री दीनदयाल शर्मा जी अच्छे तबला वादक रहे हैं। उनसे रविकान्ता जी को बहुत लाडू प्यार व संगीत के प्रति प्रोत्साहन विशेषकर प्राप्त हुआ। श्री दीनदयाल शर्मा जी बिलासपुर महाविद्यालय में बतौर तबला वादक (संगीत किशोर) कार्यरत रहे। उनसे प्रेरणा पाकर व अपनी माता जी के प्रोत्साहन से रविकान्ता जी ने लगभग 9 वर्ष की आयु से गाना शुरू कर दिया था।

पारिवारिक सहयोग व जागरूकता के कारण बेटी रविकान्ता के संगीत जीवन व शिक्षा के दर्शन आये हमेशा खुले रहे। अतः इनका भरपूर लाभ उठाने हुए रविकान्ता जी ने अपनी पढ़ाई के साथ-साथ संगीत की भी विधिवत शिक्षा लेना आरम्भ कर दिया। इसके तहत उन्होंने श्रीमती शुक्ला शर्मा जी (संगीत प्रमाणिक, Retd. Principal, Govt. College Kullu) से संगीत की बारीकियाँ सीखना शुरू की। बिलासपुर कॉलेज से भी ए. की पढ़ाई के दौरान कई प्रतियोगिताओं में भाग लेकर व प्रतियोगिताएं जीत कर रविकान्ता जी ने अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया। इसी कड़ी में धर्मशाला में संगीत प्रतियोगिता में राग गुरजी तोड़ी गाकर उन्होंने सभी को श्रद्धांजलि कर दिया। कार्यक्रम के मुख्यालिखित शिखर मन्त्री श्री शिवकुमार (तक्तालीन) जी ने इस्तेमाल की परिवेश पुस्तका की उपाधि से ही नवाज दिया। इस प्रस्तुति के कारण पंजाब विश्वविद्यालय में उन्हें बतौर लोकगायिका गाने के लिए आमंत्रित किया गया। वहां पर उन्हें पंजाबी गायक गुरदास मान के साथ संध सांझ करने का अवसर मिला। रविकान्ता जी की
प्रमुखता से प्रभावित होकर गुरुलास मान जी ने उन्हें बम्बई आने का न्यौता दिया। वहां फर उन्हें मुख्यालय स्थ. सुनील दत्त (अभिनेता) के समक्ष गाने का अप्सर मिला। सुनील दत्त जी ने उनकी प्रतिमा से प्रभावित होकर उन्हें अभिनय के लिए प्रोत्साहित किया। इस प्रकार प्रोटेस्ट निर्भर होकर जैसे रविकांता जी की प्रतिमा को नए पर लगे।

इसके बाद तो उन्होंने अपनी प्रतिमा के जलवे हर छोटे-बड़े मंच पर प्रस्तुत किया। 1980 के दशक में All India Level की गजल प्रतियोगिता के अन्तर्गत प्रसिद्ध गॅटी बियेर शिमला में अपना कार्यक्रम प्रस्तुत किया। इस प्रकार रविकांता जी जैसी संगीत प्रतिमा ने अपनी स्वर लहरियों को निर्मा नए आयाम प्रदान किया।

पारिस्थितिक सामाजिक गृहस्थ बच्चों की नई भूमिका के अन्तर्गत 1984 ई. में रविकांता जी का विवाह भयंकर मोहल्ला, जिला मण्ड़ि के श्री एस.डी. कसरप्प जी के साथ सम्पन्न हुआ। इस प्रकार सामाजिक पारिवारिक जटिल बच्चों की अहम जिम्मेदारी को भी रविकांता जी ने बड़ी सहजता से समाप्त करना बेढ़ा उठाया। यहां पर भी उन्हें अपने पति जो स्वयं एक संगीत प्रिय व्यक्ति हैं का भरपूर साथ दिली। इस प्रकार उन्होंने पारिवारिक जिम्मेदारियों के साथ-साथ संगीत सकर को भी जारी रखा। समय बीतने के साथ ही रविकांता जी को पुत्र व पुत्री के रूप में संतान प्राप्त हुई। बेटा आरोही व बेटी शिवागी अपनी माता व पिता की छत्र छाया में संगीतक महोद में पलने-बढ़ने लगे।

रविकांता जी ने अपने संगीतिक जीवन की शुरुआत मात्र 9 वर्ष की आयु से कर दी थी। इसके बाद विविध शास्त्रीय संगीत की शिक्षा प्राप्त कर इहोंने अपनी आवाज को और अधिक आयाम प्रदान किये। चूँकि संगीत के प्रति प्रेमन इन्हें फारिवारिक रूप से ही मिली अत: इन्हें किसी प्रकार के सामाजिक, आर्थिक या फारिवारिक संघर्ष का सामना नहीं करना पड़ा। संगीतिक सक्रियता के दौरान रविकांता जी ने देश प्रदेश के कई मंचों पर अपनी स्वर लहरियां विस्तारित हैं। वर्तमान में रविकांता जी
का अपना एक उद्देश्य ग्रुप है जो कि हिमाचल के हर मंच पर सक्रिय रूप से अपने कार्यक्रम मंचित कर रहा है।

रेडियो के माध्यम से भी रविकांत जी को अपने लोकगीतों को प्रदेश के साथ-साथ देश भर में प्रसारित करने का मौका 1977 ई. में मिला। इस दौरान उन्हें व्यक्ति परिक्षा में उत्तीर्ण घोषित किया गया। उस समय श्री शशी जी Station Director थे। विशेषकर रेडियो कलाकार श्री अच्छर सिंह परमार जी ने उन्हें लोकगाथिका हेतू प्रोत्साहित किया।

वियाड़ोपरात रविकांत जी ने अपने पति द्वारा स्थापित एस.डी. कल्याण असोजिए रोडिंग स्टूडियो में अपने कैसेट व सी.डी. निकालीं जिनमें यादों के मौसम 1989-1990, आइट- 1990, सांवरिया शीन बजा- 1990-1991, मौ आदि शाक्ति प्रणाम- 1992 व कुल्लू लोकगीत के अन्तर्गत हवाएं नामक कैसेट शामिल हैं। इसके अलावा भाषा कला संगीत आकाशी की तरफ से 2000 ई. में पारंपरिक लोकगीत नामक कैसेट में मोहन राठौर व पं. ज्वाला प्रसाद जी के साथ गीत गाए।

रेडियो कैसेट के अलावा रविकांत जी ने विभिन्न मंचों जैसे कुल्लू दशहरा, शिवराजी (मण्डी), नलवाड़ (सुन्दरनगर), लंक, समर फेस्टिवल, नलवाड़ी (बिलासपुर) आदि के साथ ही साथ प्रदेश के बाहर, जम्मू-कश्मीर, पंजाब, बांबे आदि जगहों पर भी कार्यक्रम प्रस्तुत किए। इस दौरान उन्होंने मोहन राठौर, पं. ज्वाला प्रसाद, शाक्ति विष्ट, अच्छर सिंह परमार, कली चौहान आदि कलाकारों के साथ ही साथ गुरुधारा मान जैसे प्रसिद्ध पंजाबी गायक के साथ मंच भी साझा किया।

जिस प्रकार हर कलाकार की सफलता के पीछे किसी न किसी प्रेरणा, प्रोत्साहन हेतु काम न कोई व्यक्ति रहता है। उसी प्रकार रविकांत जी भी अपनी सफलता का स्रोत अपने तार जी को देती है। जिनके प्रोत्साहन के कारण उनका संगीत के क्षेत्र में पदार्पण हुआ। साथ ही वे अपनी आवाज में विविध आयामों को प्रत्येक हेतु अपनी गुरू श्रीमती शुक्ला सर्मा जी का भी विशेष आभार जताते हैं जिनके सानिध्य में
उन्हें शास्त्रीय संगीत व गायन की बारीकियों को सीखने का अवसर मिला। हिन्दी फिल्म जगत की मशहूर गायिका लता मंगेशकर व आशा भोसले जी की भी बोली प्रेरणा स्त्रोत मानती हैं जिन्हें सुन-सुन कर वो बढ़ी हुई।”

1 साहित्यकृत विवरण — लोक गायिका श्रीमती संजीवना कुमार
3.9 श्रीमती बसन्ती देवी

"श्रीमती बसन्ती देवी जी हिमाचल लोक गायिकी के क्षेत्र में किसी नाम की गोहताज नहीं है। उनका नाम लोक गायिकी के क्षेत्र में काफी समानाने से लिया जाता है। दमदार आवाज के साथ-साथ पारंपरिक लोकगीतों के उपर उनकी पकड़ उन्हें अलग ही स्तर पर स्थापित किए हुए हैं। श्रीमती बसन्ती देवी जी का जन्म पारंपरिक संगीत घराने में वर्ष 1948 ई. को जिला शिमला की डियोग तहसील के वल्म नामक गांव में हुआ। इनके पिता श्री सरिशा राम व माता श्रीमती मैना देवी उस समय जाने गाने पारंपरिक लोकगायक रहे। अतः संगीत के बीज संस्कार रूप में बसन्ती जी को जन्म से ही मिले। परिवार में उनके अलावा दो भाई और हैं। बचपन से ही बेटी बसन्ती अपनी माता के साथ विविध कार्यक्रमों में गाने रही जाती रहीं। उनकी माता स्वयं शास्त्रीय संगीत में नियुक्त रहीं थीं। अतः बसन्ती जी को सांगतिक प्रतिमा अपनी माता से ही संस्कार रूप में प्राप्त हुई।

आर्थिक रूप से बसन्ती देवी जी काफी गरीब परिवार से सम्बन्धित थीं। अतः बेटी बसन्ती को भी सुकि रहित जीवन के संघर्ष से दो-चार होना पड़ा। बूढ़े उस समय बेटियों का शिक्षा व सामाजिक स्तर पर इतना अच्छा नहीं था। अतः इस पिछ्पे का खामियाजा बेटी बसन्ती को कम आयु में विवाह जैसे सामाजिक जिम्मेदारी वाले बधन में बन्धकर चुकाना पड़ा। एक तरफ कमसिन बसन्ती तो दूसरी ओर लगभग 60 वर्ष की आयु का पति व पारंपरिक जिम्मेदारी ने बसन्ती को जीवन के संघर्ष में ला खड़ा किया।

मां-बाप से संस्कार में मिली विधा ने बसन्ती को इस जिम्मेवारी को निमाने में और ज्यादा होस्ता दिया। रिश्ते में बसन्ती जी के पति उनकी मां के मामा थे। बूढ़े की वे पहले से विवाहित थे परन्तु उनके कोई औलाद न होने के कारण बसन्ती जी का विवाह
इनके साथ हो गया। पति स्व. श्री गरीबू राम स्वयं संगीत के शौकीन थे। अतः उन्होंने बसन्ती की संगीत रूचि व ज्ञान का समान करते हुए सदैव इन्हें इसके साथ जुड़े रहने के लिए प्रेरित किया।

पर्यावरण में बसन्ती देवी जी के छ. बेटे हैं। जिनका लालन-पालन इन्होंने काफी संरचना का सामना करते हुए किया। चूंकि बसन्ती देवी जी के पति की आर्थिक हालत भी दयनीय थी। अतः विवाहपरवर्ती भी इन्होंने काफी अभावप्रस्त कीजिया जिया। संघर्ष की हद तो तब हुई जब इनके पति छ. बच्चों की जिम्मेवारी बसन्ती के कन्यों पर छोड़ कर स्वर्गवासित हो गए। उस समय बसन्ती लगभग 40 वर्ष की थी। परन्तु फिर भी इन्होंने बड़ी दुःखी के साथ अपने बच्चों का लालन-पालन किया। कभी-कभी तो बच्चों के साथ-साथ स्वयं भी भूखा सोना पड़ा। परन्तु फिर भी इन्होंने अपने संगीत को नहीं छोड़ा। स्वयं हल बलकर फसल उगाकर बच्चों का भरण-पोषण तक किया।

संगीतिक रूप से संगीत संस्करण में पैदा हुई बसन्ती जी को संगीत संस्करण से ही मिला। इन्होंने अपनी माता में देवी जी जो कि काफी अच्छी गायिका थी, से ही अपनी संगीत शिक्षा ग्रहण की। विवाहपरवर्ती भी पति ने इन्हें संगीत के प्रति काफी प्रोत्साहित किया। पारम्परिक संगीत संस्करण से सम्बन्धित बसन्ती को सामग्रिक उत्सवों तथा संस्करणों में शामिल होना का मौका भी मिला। यहां पर उन्होंने अपनी बुलंद आवाज की स्वर लहरियों से लोगों को काफी प्रभावित किया। अतः लोग अब बसन्ती देवी जी को विशेष रूप से इस प्रकार के कार्यक्रमों में बुलाने लगे। इससे आर्थिक रूप से भी बसन्ती जी को काफी प्रोत्साहित मिला। धीरे-धीरे बसन्ती देवी की प्रतिभा अपने क्षेत्र से निकलकर आस-पास के क्षेत्रों में फैलने लगी।

वर्ष 1965-1966 में बसन्ती देवी की आवाज को रेडियो के माध्यम से ऐसा मंच मिला जिससे कि उनकी संगीत प्रतिभा देश-प्रदेश में फैलने लगी। फिर तो जैसे बसन्ती देवी की प्रतिभा को पंख लग गए। अब बसन्ती देवी के कार्यक्रमों का प्रस्तुतिकरण प्रदेश व देश के विभिन्न मंचों पर होने लगा। उन्होंने हिमालय में लगभग हर जगह अपने
कार्यक्रम प्रस्तुत किए। जैसे कुलू, दशहरा, शिवरात्रि (मण्डी), मिंजर मेला, लवी मेला, समर फैस्टिवल, नलवाड़ी (विलासपुर), नलवाड़ (सुन्दरनगर) इत्यादि। इसके अलावा इन्होंने राज्यीय स्तर पर दिल्ली, अमृतसर, लखनऊ, पश्चिम बंगाल, आदि राज्यों में भाषा कला संगीत अकादमी के कार्यक्रमों में भी भाग लिया। इसी कहाँ में लगभग 2006–2007 से इन्होंने दूरदर्शन से भी अपने कार्यक्रम प्रस्तुत किये। अपने संगीत जीवन के दौरान इन्होंने नामी कलाकारों जैसे शान्ति हेडा, शान्ति विष्ट, अच्छर सिंह परमार, हेतराम तनवर, परसराम तोमर, शकुंतला तोमर, इत्यादि छायां आदि के साथ कार्यक्रम प्रस्तुत किये। इन सभी मंच पर कलाकारों से बस्तनी देसी के संगीत की काफी बारिशियां भी सीखीं जिससे इनकी कला को और निखार मिला। लगभग 1990 के दशक में इनकी प्रतिभा का समान करते हुए Music Today Cassetts ने इनको गाने का मौका दिया। इसमें इनके साथ मोहन राठौर, हेतराम तनवर, शान्ति विष्ट व तीर्थ, सम आदि ने साथ मंच सांसारिक किया।

सांगीतिक रूप से बस्तनी देवी जी का जीवन काफी उपलब्धियां भरा रहा। 1960 के दशक में रेडियो में गाने का मौका, भाषा कला संगीत अकादमी में कलाकार के तौर पर नौकरी व दूरदर्शन आदि के माध्यम से बस्तनी जी को प्रदेश से निकलने देश भर में अपनी प्रतिभा का लोहा मनाने का सुनहरा अवसर मिला।

सामाजिक व आर्थिक जीवन के संग्रह ने बाबजुद बस्तनी देवी मानती है कि संगीत कला के कारण ही आज वो इस स्तर तक पहुँची पाई है। माता से संस्कार रूप में संगीत शिक्षा, पति का सहयोग व समाज के विभिन्न लोगों के समान भाव के कारण ही श्रीमती बस्तनी देवी एक प्रसिद्ध व स्थापित गायिका बन पाई है। वर्तमान में श्रीमती बस्तनी देवी जी ने अपने बेटे राजेश गन्धर्व को संगीत संस्कार रूप में प्रदान किया है जो कि एक काफी अच्छे गायक, Key Board व हार्मोनियम वादक है व अपने संगीत बुध के साथ कई मंच पर कार्यक्रम प्रस्तुत करते हैं।”

1 साक्षात्कृत विवरण – लोक गायिका श्रीमती बस्तनी देवी
3.10 श्रीमती लीला शर्मा

"सांगीतिक पृष्ठभूमि से रहित श्रीमती लीला शर्मा का जन्म 1945 ई. में एक ब्राह्मण परिवार में जिला शिमला के ग्राम के लाहार नामक गांव में हुआ। इनके पिता श्री छांगू राम व माता श्रीमती स्वामा देवी थीं। परिवार में तीन बड़ी बहनें व एक छोटे भाई के साथ-साथ लीला जी का बचपन बड़े ही लाठ प्यार से बीता।

सामाजिक रूप से एक उच्च वर्गीय परिवार में जन्म के कारण लीला जी को किसी भी सामाजिक विरोधाभास का सामना नहीं करना पड़ा। अपनी माता के साथ-साथ बचपन से ही विवाह, शादी, जन्म संस्कार आदि विभिन्न सामाजिक अवसरों पर सम्मिलित होने का इन्हें अवसर मिला। अपनी माता व अन्य रिस्तेदारों को सुन-सुन कर इनमें भी संस्कार गीतों को गाने की भावना की जागृति हुई। तब से तक हर संस्कारिक आयोजन पर इन्होंने भी गीतों को गाना शुरू किया। परन्तु अपनी सांगीतिक प्रतिभा को इन्होंने केवल इन्हीं अवसरों तक सीमित रखा।

1960 के दशक में शिमला के ही झुन्नी तहसील के गांव भारी में श्री योगराज शर्मा जी से इनका विवाह सम्पन्न हुआ। श्री योगराज शर्मा जी चूँकि संगीत के प्रति काफी रुचि रखते थे। अतः अपनी पत्नी की छुपी हुई प्रतिभा को पहचान कर इन्होंने उन्हें रेडियो से गाने के लिए प्रोत्साहित किया। पारिवारिक रूप से श्रीमती लीला शर्मा के दो बेटे व एक बेटी हैं जिनमें एक बेटा डॉ. हुमा शर्मा संगीत निर्माण हैं व आर्ने इंडिया रेडीयो में तत्त्वज्ञ संगीतकार व उद्घोषक के पद पर कार्यरत हैं। पति व बेटे के प्रोत्साहन के कारण ही श्रीमती लीला जी ने रेडियो पर गाने के लिए हामी भरी।
1975-1986 के दरार में लच्छीराम सलीम जी उस समय Music Composer थे व बाद में Station Director के पद से सेवानिवृत्त हुए के समक्ष श्रीमती लीला जी ने अपना गीत प्रस्तुत किया। लोकगायिकी के लिए पति व बेटे के प्रत्याशियों से श्रीमती लीला शर्मा जी को किसी भी प्रकार के संघर्ष का सामना नहीं करना पड़ा। चूंकि संगीत (लोकगायिकी) के बीज तो लीला जी के जीवन में बचपन से ही पड़ चुके थे। परन्तु फिर भी उनकी प्रतिमा को एक अहम मंच के रूप में रेडियो ने एक ऐसा अवसर व मंच प्रदान किया जिससे उनकी आवाज को एक प्रभाव मिली।

श्रीमती लीला जी ने केवल संस्कार गीतों को ही अधिकतर गाया। परन्तु फिर भी उन्होंने पारस्परिक गीतों को भी संरक्षित करने के लिए अपने अहम्योगदान दिया है। उनके हारा गए गए सुहाग, झूरी व बखाई गीत रेडियो के माध्यम से काफी प्रचलित हुए। 1985-1986 से रेडियो से अपने संगीत सफर के दौरान श्रीमती लीला जी B-high Grade की कल्पना रही है। परन्तु सामाजिक, आर्थिक संघर्ष के अलावा एक और संघर्ष होता है शारीरिक स्वास्थ्य जिसके कारण उन्होंने लगभग चार वर्ष से अपने मामले को स्थगित कर दिया। परन्तु फिर भी आज जब भी उनके हारा गए गए संस्कार गीत रेडियो से बजते हैं तो लोग अपने आप को अपनी संस्कृति के और पास महसूस करते हैं।

अपने सांगीतिक जीवन के दौरान श्रीमती लीला जी ने संगीत को केवल मात्र अपना शोक ही बनाए रखा। आर्थिक व सामाजिक समस्याओं के कारण उन्होंने कभी भी बनोपार्जन के लिए संगीत का सहारा नहीं दिया बल्कि शोक को पूरा करने तथा पति व पुत्र की प्रेमन की कदम करते हुए केवल रेडियो से ही अपने कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

इसके साथ ही उन्होंने अपनी सहेलियों व रिश्तेदारों के साथ ही साथ सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भी अपनी कला का प्रस्तुतिकरण किया व काफी समान अर्जित किया।

श्रीमती लीला शर्मा जी की लोकप्रियता में अहम योगदान उनके हारा गए गए व सहेजे गए, पुराने लोका व संस्कार गीतों का रहा। सांस्कृतिक रूप से आज भी हमारे
समाज में इस प्रकार के गीतों का काफी प्रचलन है। चूकि भावी बीढ़ी इससे काफी दूर जा रही है। फिर भी श्रीमती लीला शर्मा जी जैसी प्रतिभाओं के कारण ही आज भी हमें अपनी पारंपरिक, सांस्कृतिक जीवन की समृद्धि व सम्पन्नता की जानकारी बड़े ही आकर्षक रूप में मिलती है।

अपनी रेडियो यात्रा के समय में बताते हुए श्रीमती लीला शर्मा जी कहती हैं कि एक बार किसी सामाजिक जालसे में शरीक होने हेतु श्री लक्ष्मी राम सलीम हमारे गांव में पड़ा थे जहां पर उन्होंने श्रीमती लीला जी को संस्कार गीत गाते हुए सुना तथा वहाँ पर उनकी आवाज को Approve कर दिया व Racordig हेतु Radio Station में बुलाया। Recording के समय इनके बेटे डॉ. हुकम शर्मा जी ने बांसुरी बादन भी किया।

अपनी माता के विषय में बताते हुए डॉ. हुकम जी कहते हैं कि उनकी माता के लोक गायन में एक स्वाभाविकता होने के कारण ही उन्हें इतना प्रोत्साहन व पहचान मिली है। इन्हीं की प्रेरणा स्वरूप ही मैंने भी संगीत को विषय के रूप में ग्रहण करके संगीत शिक्षा ग्रहण की व अपने आप को इस स्तर तक पहुंचाया है।"1

1 स्वाभाविक गायन - लोक गायिका श्रीमती लीला शर्मा
3.11 श्रीमती रेणु भार्द्वाज

‘हिमाचल लोक संस्कृति को अपनी लोक गायकी के माध्यम से संरक्षित करने में रेणु भार्द्वाज का अहम योगदान है। रेणु भार्द्वाज जी का जन्म 9 जून 1967 ई. को जिला शिमला में हुआ। इनके पिता स्व. श्री टी.आर. भार्द्वाज (Sr. Technical Assistant, Nauni University) व माता श्रीमती पार्वती भार्द्वाज है। परिवार में इनके अलावा एक छोटे भाई भी है। एकलीती बेटी होने के कारण बेटी रेणु का लालन-पालन माता-पिता ने बड़े ही लाड़-प्यार से किया। सांगीतिक रूप से रेणु जी के परिवार की कोई पृथ्वीभूमि नहीं है। अपितु संगीत में गायन की रूढि इनमें ब्यवपन से ही स्वतः उत्पन्न हुई। स्कूली पढ़ाई के दौरान अध्यापकों के प्रोत्साहन के कारण रेणु जी के लोक गायकी प्रेम को विशेष जमाया मिला। अतः इन्होंने स्कूल में ही सांगीतिक कार्यक्रमों में गीत गाना शुरू किया। प्रथम मंच के रूप में रेणु जी ने 7वीं कक्षा के दौरान शिमला के आईस स्कैटिंग रिंक में रामलीला के दौरान अपनी माता व सातों बच्चों के प्रोत्साहन के कारण अपना प्रथम गीत गाया। इतनी छोटी आयु में हजारों लोगों के समक्ष अपना पहला पहाड़ी गीत ‘महारे पाड़ो सारे सिर दिल्लीये गया’ तो लोगों ने तालियों से बहुत प्रोत्साहित किया। फिर तो जैसे लोकगायकी के प्रति रेणु जी की भावना को और अधिक प्रोत्साहित मिला।

संगीत के साथ-साथ रेणु भार्द्वाज पढ़ाई में भी अच्छी व होनार साबित हुई। इन्होंने 1987 ई. में शिमला के कुफरी नामक स्थान से Hotel Management के अन्तर्गत House Keeping में प्रशिक्षण प्राप्त किया। 1989-1991 के दौरान इन्होंने देहरादून से Civil Engineering के अन्तर्गत Draftman का प्रशिक्षण प्राप्त किया। वर्तमान में रेणु
भारद्वाज जी शिमला के ही शोधी नामक क्षेत्र में स्थित एक Hotel में House Keeping Manager के पद पर कार्यरत हैं।

रेणु भारद्वाज जी का विवाह 1987 ई. में शिमला जिला के कोटगढ नामक स्थान पर श्री मनोज भारद्वाज जी के साथ सम्पन्न हुआ। श्री मनोज जी वर्तमान में Property Dealing का अपना निजी व्यवसाय शिमला में चलाते हैं। परिवार में रेणु जी के एक बेटा व एक बेटी हैं। इनकी बेटी स्मृति भारद्वाज कल्याण नृत्य में प्रशिक्षण प्राप्त हैं साथ ही बेटे ने भी शास्त्रीय संगीत गायन में प्रशिक्षण प्राप्त किया है। चूँकि रेणु जी ने लोकगायकी को शोक के तीर पर अपने जीवन में रखा परंपरा फिर भी अपने शोक के प्रभाव के कारण लॉकडाउन के युग में अपने बच्चों को संगीत के प्रति हमेशा प्रोत्साहित किया। विवाहित जीवन के उपरान्त रेणु जी को लोकगायकी के क्षेत्र में अपनी पहचान बनाने हेतु इनके पति जी ने अत्यधिक प्रोत्साहित किया। क्योंकि वो स्वयं मोहम्मद रफी के गीतों को सुनना व गाना पसन्द करते हैं।

पारिवारिक जिम्मेदारियों को सफलता पूर्वक निमाने के साथ-साथ रेणु जी ने अपने पति के सहयोग के कारण ही अपने लोकगायकी के शौक को जीवित रखा। रेणु जी ने 1983 ई. में रेडिया से युवावरी नामक कार्यक्रम प्रस्तुत करने का अवसर प्राप्त किया। इसी दौरान इन्होंने 1984 ई. में लोकगायकी का भी Audition दिया व सफल रहीं। तब से लेकर निरंतर रेणु जी आकाशवाणी शिमला से अपने लोकगीतों को प्रसारित करती आ रही हैं वर्तमान में रेणु जी ने आकाशवाणी में बतौर गायिका B- High Grade प्राप्त कर लिया है। चूँकि अन्य महिला कलाकारों की बजाय रेणु जी की पारिवारिक, सामाजिक व आर्थिक स्थिति काफी समृद्ध थी। अतः पारिवारिक सहयोग के कारण इन्हें किसी भी अन्य विरोधाभास का सामना नहीं करना पड़ा।

रेणु भारद्वाज जी ने हिमाचल प्रदेश के विभिन्न हिस्सों में अपने लोकगीतों का मंचन किया हैं। जैसे नलवाड़ी, लदी, समर फेस्टिवल शिमला, शूलनी मेला सोलन, जिवरात्री मण्डी, मिजर चम्बा, होली सुजानपुर आदि।

78
रेणु भारद्वाज जी ने विभिन्न संगीत कर्मचारियों के माध्यम से अपनी लोकगीत Cassets निकाली हैं। जैसे- एस.के.एस. रामबाजार के माध्यम से — पहाडी नाटियां, एस.डी. कश्यप से आन मिलो सजना, दिल की चाहत, धामका व तमन्ना इत्यादि इनकी प्रसिद्ध Cassets हैं।

रेणु भारद्वाज जी की प्रतिभा को कई प्रकार के राज्य सरकार सम्मानों से अलग-कुल किया जा चुका है साथ ही इन्होंने अपने संगीतिक जीवन काल में कई प्रकार की सांगीतिक प्रतियोगिताओं में जीत दर्ज की है।

चूँकि रेणु भारद्वाज जी ने संगीत की किसी भी प्रकार की शिक्षा नहीं ली अपितु विभिन्न प्रकार के गायक गायिकाओं को सुन-सुन कर ही लोकगीतिकी को अपने अंदर आसमान कर लिया। सांगीतिक वर्तमान परिसंपर्क के सम्बन्ध में रेणु जी के विचार हैं कि लोक संस्कृति के साथ नित नए-नए प्रयोग समय की मांग हैं किन्तु फिर भी नए कलाकारों को लोक संस्कृति की आत्मा की स्वभाविकता को बनाए रखने के लिए हमेशा जागरूक रहना चाहिए।

अपनी संगीतिक उपलब्धियों के लिए रेणु भारद्वाज अपने माता-पिता व पारंपरिक लोकगीतों के संबंध में रखने की अपनी सहज व सरल भावना को जिम्मेदार मानती हैं साथ ही वह यह भी मानती है कि जिन्दगी हर क्षण कुछ न कुछ नया सिखाती है। अतः हमें सदैव जागरूक रहकर जीवन की अच्छी सीखों को सजोकर रख लेना चाहिए। जीत उसी प्रकार जिस प्रकार किसी से भी संगीत के विषय में कुछ बातें किया सीखने का अवसर मिले तो उसे गवाना नहीं चाहिए।१

---

१ सामाजिक विकास — लोक गायिका श्रीमती रेणु भारद्वाज
3.12 स्व. रौशनी देवी

'लोकगाथिका स्व. रौशनी देवी जी का जन्म हिमाचल प्रदेश के जिला सोलन की तलाशीन रियासत 'बाघल' के 'समोतिखार' नामक गांव में 20 मार्च 1944 को हुआ। इनकी माता का नाम श्रीमती नन्दी तथा पिता का नाम श्री नजरू राम था। वर्ष व्यक्ति के अनुसार इनका जन्म 'तुरी' (संगीतमुखी) नामक घराने में हुआ था जो कि 'मनु' वर्ष व्यक्ति के अनुसार शुद्ध ज्ञाति के अन्तर्गत आता है। इसकी उपरिख्यत त्रयोक्ते सुम कार्य, महूर्त, संक्रान्ति, तीज-त्योहार, देव पूजन तथा काव्य धर्मी महिला के समय अनिवार्य समझी जाती रही है। अपने जन्म के समय स्व. रौशनी देवी जी को तनक भी वह आमास नहीं रहा होगा कि भविष्य में उनके द्वारा गाए गए गीतों के इसनी प्रसार व प्रसिद्ध मिलेगी।'1

'रौशनी देवी जी की माता स्वरूप सामान्य थी सम्मत: उसने बच्ची के जन्म के समय बाघल जनपद का सुपरिस्माद लोकगीत 'लोका' गाया होगा। क्योंकि चैत्र मास था इसलिए चैत्र मास के गीत भी गाए होंगे। इन दिनों में वह प्रसूति अवस्था में थी और बाहर जाना उसके लिए सम्भव नहीं था। माता नन्दी ने जाने क्या दौड़ कर जन्म के तेजरंग दिन होमु आदि रखकर बेटी को रौशनी नाम दे दिया। पिता नजरू ने भी बच्ची को अपनी पूरी दृष्टि से निहारा और घर में आई सरस्वति 'रौशनी' को स्वीकार कर गोद में ले लिया।'2

'परिवार में रौशनी देवी के अलावा उनकी दो बड़ी बहनें थीं। रौशनी देवी सबसे छोटी होने के कारण माता-पिता की लाड़ली थी। इसके विपरीत रौशनी जब थोड़ी बड़ी हुई तो अपने मां-बाप के साथ विभिन्न व्यक्तियों व शुभ अवसरों में जाने लगी। इन्हीं अर्थक्रमों में वह अपने माता-पिता का अनुसरण करते हुए अपनी तोतली आवाज में उनके गीतों को गुनगुनाने व नृत्य की विभिन्न भाव भाँगियां बनाने का प्रयास करने लगी। फलस्वरूप जैसे-जैसे वह बड़ी होती गई वैसे-वैसे संगीत के प्रति उनकी श्रद्धा

1 अशोक हंस, बड़ी सिंह भाटिया, पवित्र से उमरे कलाकार, पृष्ठ—166
2 अशोक हंस, बड़ी सिंह भाटिया, पवित्र से उमरे कलाकार, पृष्ठ—166
व रूचि बढ़ने लगी। सम्बन्धतः यह उनके लोक संगीत के क्षेत्र में पदार्पण के संकेत थे।"  

वैसे तो हमारे समाज में स्वयं के लिए कड़े नियम निर्धारित किए जाते रहे हैं लेकिन स्व. रौशनी जी की कला में इतना आकर्षण था कि लोग उनका कार्यक्रम सुनने व देखने के लिए बरसस ही खिंचे चले आते थे। अन्य स्त्री कलाकारों की तरह उन्हें समाज से कोई खास विरोधाभास सहना नहीं पड़ा था। सामाजिक वृत्ति से वह एक गाने-बजाने वाले घराने से सम्बन्धित थी। शायद इसीलिए समाज में उन्हें अपनी कला को प्रचारित-प्रसारित करने के लिए प्रोत्साहन भी मिला। पिछड़े वर्ग से होने के फलस्वरूप भी उनकी कला के कारण समाज में उनकी बहुत इजहार व मान-समान था।  

रौशनी देवी एक गरीब परिवार से सम्बन्धित थी। लेकिन धीरे-धीरे उनकी लोकप्रियता बढ़ने के कारण उन्हें विभिन्न कार्यक्रमों में बुलाया जाने लगा। फलस्वरूप उन्हें कार्यक्रमों के आयोजन से लोकप्रियता के साथ-साथ पैसा भी मिलने लगा। इस प्रकार वह अपने माता-पिता के लिए एक कमाऊं पुत्र साबित हुई। लेकिन रूढ़ियों से बसिन्दा उनके माता-पिता ने उनकी शादी मात्र 14-15 वर्ष की आयु में ही एक अधेड़ आयु के व्यक्ति से कर दी। लेकिन कमलिन रौशनी अपनी आयु से कहीं अधिक आयु के व्यक्ति को स्वीकार नहीं कर पाई। अतः वह उसे ददा के लिए ल्याग कर बापस अपने बाप के पास लौट आई। अब रौशनी जीवन के उस पड़ाव पर आ पहुंची थी जहां उसे स्वयं ही अपना भविष्य तय करना था।  

भगवान के आर्थिक से उसे प्रेरणा की एक लो दिखाई दी और वह बढ़ चली उस प्रकाश रूपी भविष्य की तरफ। "मात्र 14 वर्ष की आयु में ही उनका गाना "शिमला आकाशवाणी केन्द्र" में रिकॉर्ड किया गया।"  

1 अर्जोक हंस, बद्री सिंह माठिया, पर्वत से उमरे कलाकार, पुंड- 166  
2 अर्जोक हंस, बद्री सिंह माठिया, पर्वत से उमरे कलाकार, पुंड- 166
समारोहों के अभाव में उन्हें उपयुक्त धन प्राप्त नहीं हो रहा था। इसलिए उन्होंने 1960 के दशक में सोलन के सलोगढ़ नामक क्षेत्र में ‘सलोगढ़ नाटक कल्ब’ का गठन किया जो उन्हें नाटकों की अनोखी दुनिया की ओर ले गया। इनके द्वारा मचित नाटकों की धूम भी धीरे-धीरे चढ़ी और फैलने लगी। इसी मण्डली में उनकी मुलाकात प्रीतम चन्द्र जी से हुई जो स्वयं एक अच्छे कलाकार थे।’’

यह रौशनी देवी के जीवन का संघर्ष काल था। रोजमर्रा की भागदोड़ व थका देने वाले कार्यक्रमों के आयोजन को उस समय विश्व मिला जब उन्हें वर्ष 1969 में एक कलाकार के रूप में 'केंद्रीय गीत एवं नाटक प्रभाग' में नौकरी प्राप्त हुई। इसी के साथ उनके प्रति प्रीतम चन्द्र भी इसी प्रभाग में सेवारत हो गए थे। अब दोनों पति-पत्नी कमाने लग गए थे और घर का खर्च भी आसानी से चलना लगा था।’’

1960-1970 के दशक में स्व. रौशनी देवी का सांस्कृतिक जीवन अपने पूर्ण योग्य पर था। इसी प्रसिद्धि के चलते वर्ष 1969 में उन्हें केंद्रीय गीत एवं नाटक प्रभाग शिखर में बंधूर कलाकार नौकरी प्राप्त हुई इसके फ़ायदे से उन्होंने प्रदेश व देश भर के विभिन्न क्षेत्रों में अपने कार्यक्रम प्रसारित किए। उन्होंने अभिनेत्री रीता राय के लिए एक हिन्दी फिल्म ‘बदलते रिश्ते’ में एक बिवाह गीत 'बटना' भी गाया।’’ अपने सांस्कृतिक जीवन के दौरान रौशनी देवी ने कई प्रसिद्ध कलाकारों जैसे- इंद्र पाल छाबड़ा, गम्भीर देवी, डॉ. रामरघु शाहिदल, जय नारायण, हेमनत तलवार, परशुराम तोमर, शकुंतला तोमर, अच्छर सिंह पशुपाल आदि के साथ विभिन्न मंचों को सांझा किया।

स्व. रौशनी देवी का सांस्कृतिक जीवन बचपन से ही अपने माता-पिता के सानिध्य में आसम हो चुका था। वृद्धि वह एक बहुआयामी कलाकार थी जो कि लोकगायन, व लोकनृत्य के अलावा लोकनाट्य के विभिन्न चरित्र बदल सहजता से अभिनेता किया करती थीं। परन्तु फिर भी लोकगायन का उनके सांस्कृतिक जीवन में

1. नरेंद्र कुमार शर्मा, दैनिक ट्रिब्यून, पुस्तकपत्र 10 अगस्त- 1997
2. अरोपक हरी, बद्री सिंह माटिया, पत्रिका से उनके कलाकार, पृष्ठ- 166
3. रघुबंबा सहाय, दैनिक ट्रिब्यून, पुस्तकार्य 13 सितम्बर, 1969, पृष्ठ- 16
प्रमुख स्थान रहा। वैसे तो रौशनी देवी सोलन जनपद व आस-पास के क्षेत्रों में काफी प्रसिद्ध थी। परन्तु उनकी प्रादेशिक स्तर तथा देश भर में पहचान तब बढ़ी जब मात्र 14 वर्ष की आयु में उन्हें आकाशवाणी शिमला से गाने का अवसर मिला। चूंकि उस समय शिमला आकाशवाणी का ट्रांसमीटर इतना सशक्त नहीं था तथा रौशनी देवी जी के गीत जालन्धर रेडियो से सायं काल में प्रसारित होने लगे। लोग उन्हें सुनने के लिए बरसाती ही रेडियों की तरफ खिचे चले आते थे। रौशनी जी की इसी प्रसिद्धी के कारण उनके गीत विभिन्न केंद्रों जैसे जालन्धर, मधुरा, दिल्ली व श्रीनगर आदि केंद्रों से भी प्रसारित होने लगे थे। उनके जीवन का एक अहम यादगार पत्ता था जब उन्होंने भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू तथा श्रीमती इंदिरा गांधी से सम्मान अपना कार्यक्रम प्रस्तुत किया था।

हिमाचल कोशिला नाम से मशहूर स्व. रौशनी देवी जी के इस महान् व अविश्वसनीय सांस्कृतिक योगदान के कारण ही वर्ष 1995 ई. में इन्हें 'भाषा एवं कला अकादमी' की तरफ से उन्हें 'कला समानां' से सम्मानित किया गया था। इसके अलावा 'भुजिक टुड़े' व 'सरस्वती स्टुडियो' आदि संगीत कंपनियों ने उनके गानों को दो अलग-अलग कैंस्टेट ओं में रिकॉर्ड किया।

स्व. रौशनी देवी जी की इस प्रसिद्धी का सबसे बड़ा कारण उनका संगीत धराने में जयम, अथक मेहनत, संघर्षों के समक्ष जीवनाला, मधुरा व आकर्षक आवाज, कला में विविधता आदि रहा। इसके साथ ही उनके अन्दर एक महान् गुण था कि वह अपने संगीत कलाकारों से निरस्तर कुछ न कुछ सीख लेकर अपनी कला को निखारती रहती थी।

हिमाचल प्रदेश की यह महान् लोकगायिका अपने जीवन संघर्ष के समक्ष तब लाखार नजर आई जब अकाल ही उनका निधन 24 दिसम्बर, 1995 को हो गया। कहते हैं कलाकार मरते हैं, परन्तु उनकी कला सदैव के लिए अमर हो जाती है। इसका सबसे
बड़ा उदाहरण है कि लगभग मृत्यु के दो दशक बाद आज भी रेडियो से जब उनके
गीत बजते हैं तो लोग बसबस ही कह उठते हैं— शाबासे 5 5 5.

वर्तमान में स्व. रोशनी देवी जी के पति सोलन के रामशाहर में अपनी महान्
पत्नी की यादों व दो बेटियों पूजा व शैलु क तथा अपने नाती के साथ साथ जीवन व्यतीत कर
रहे हैं।
3.13 स्व. कमला रानी छाबड़ा

"महान् लोकगायिका स्व. कमला रानी छाबड़ा का जन्म 6 जनवरी 1920 ई. को जिला सोलन की अर्की तहसील के अंतर्गत आने वाले प्रसिद्ध क्षेत्र कुनिहार, जिसे छोटी बिलायत के नाम से भी जाना जाता है, के एक गांव हाटकोट में श्रीमन भगतराम तनवर जी के घर में हुआ। उनकी माता का नाम श्रीमती गंगी देवी था। वर्ण व्यवस्था के अनुसार कमला देवी जी का जन्म एक संगीत घराने में हुआ था जिसे ‘तुरी’ अथवा 'मंगलामुखी' भी कहा जाता है। इस घराने का सामाजिक विविध संस्कार व अवसरों पर गायन वादन अत्यन्त शुभ माना जाता रहा है। परिवार में कमला देवी जी की पांच बहनें व दो भाई भी थे। इस प्रकार कमला देवी जी एक बड़े व मध्यवर्गीय परिवार से सम्बन्धित रही। इनके पिता स्वयं पहाड़ी लोकगायक यन्त्रों जैसे ढोल, नगाड़ा व शाहनाई इत्यादि बजाने में निपुण थे। वह तत्कालीन कुनिहार रियासत में दरबारी कलाकार थे। कमला जी के चाचा भी इसी दरबार में विशिष्ट वाद्य यन्त्रों में निपुण कलाकार थे। इस प्रकार बचपन में ही बेटी कमला को अपने पिता व चाचा के साथ दरबार में जाने का अवसर स्वभाविक ही मिल जाया था।

आजादी के पहले तक चूंकि महिलाओं की सामाजिक स्थिति अत्यन्त दयनीय रही है। लड़कियों में अनपढ़ा एक आम सी बात थी। अतः कमला देवी जी को भी विद्यालयी शिक्षा के अंतर्गत मात्र पांचवी कक्षा तक ही शिक्षा ग्रहण करने का अवसर मिला। परन्तु विद्या को कुछ और ही मंजूर रहा होगा। तभी तो कम सिखित होने के बावजूद भी कमला देवी जी ने संगीत के माध्यम से अपनी अभिव्यक्ति का उन ऊँचाईयों पर पहुंचाया जहां लोग शर्मसा ही कह उठते थे यही! यह बात है। परन्तु फिर भी उन्होंने अपनी लगन व मेहनत से हिन्दी, उर्दू व पंजाबी भाषाओं का अच्छा ज्ञान सहज ही हासिल कर लिया था।

दीर्घ-दीर्घ कमला जी के पांव जवानी की दहलीज पर पड़े। उस समय तक चूंकि फिल्मी गीतों का प्रचार हो चुका था। अत: जहां-तहां कोई भी गीत उन्हें सुनने को
मिलता तो वह उसे आत्मसात कर गुनगुनाने लगी रहती। चूँकि वह स्वयं एक संगीत
घराने से सम्बन्धित थीं। अतः संगीत के ही वातावरण में उनका जीवन व्यतीत हो रहा
था। उनके बड़े भाई श्री शिबराम जी स्वयं एक अच्छे कलाकार थे। अतः अपनी बहन
की संगीत शिक्षा प्रारंभिक रूप से उन्हीं के मार्गदर्शन व प्रोत्साहन में होने लगी।

चूँकि कमला देवी जी के पिता व चाचा दरबारी कलाकार थे। अतः उस समय
राजदरबार में कमला देवी जो को उस्ताद बूटा खां साहब का भी सानिध्य प्राप्त हुआ।
उस्ताद साहब कभी-कभी दरबार में प्रस्तुतिकरण हेतू, आया करते थे। यहीं उन्होंने बेटी
कमला को गाते-गुनगुनाते हुए सुना तो वह अत्यधिक प्रभावित हुए। उन्होंने कहा कि
यह लड़की भविष्य में संगीत के क्षेत्र में नई ऊष्माण्यों को हासिल करेगी। भगवान व
माता सरस्वती स्वयं इसके कण्ठ में विराजमान हैं। यह सब सुनकर पिता भगत राम
बहुत अभिभूत हुए व तककल उन्होंने उस्ताद बूटा खां जी के सानिध्य में कमला देवी
जी की शास्त्रीय संगीत की तालिम आरम्भ करवा दी। महान उस्ताद का सानिध्य प्राप्त
कर बाद में कमला देवी जी ने संगीत जगत में नए कीर्तिमान स्थापित कर अपने गुरु
के ही पूर्व कथनों को साकार रूप प्रदान किया।

चूँकि रियासत कालीन समय में महिलाओं की स्थिति सामाजिक रूप से अत्यन्त
सोचनीय रही थी। उस समय लड़कियों का घरों से बाहर जाना प्रसन्न नहीं किया जाता
था। साथ ही बाल-विवाह जैसी प्रथाएं भी प्रचलन में थीं। अतः इसका प्रभाव कमला जी
के जीवन पर पड़ना भी स्वाभाविक था। अतः इनके माता-पिता ने मात्र 12-13 वर्ष की
ही आयु में इनका विवाह पंजाब लाइजर पुशिद की मम्मी जो वर्त्तमान में पाकिस्तान में हैं,
में एक ब्यवसाई श्री हंसराज छाबझा से सम्पन्न कर दिया। हंसराज छाबझा जी स्वयं
एक संगीत प्रेमी थे। अतः विवाहपराण उन्होंने कभी भी अपनी पत्नी को गाने से नहीं
रोका अपने प्रोत्साहन के तौर पर उनके सदैव विविध कार्यक्रमों में शरीक होने हेतू
प्रेरित ही किया। दूसरी तरफ अपने संगीत के साथ-साथ कमला देवी जी ने भी अपने
पति के घर को बड़ी ती हिम्मेदारी से समाप्ता। चूँकि हंसराज जी की पहली पत्नी का
बिमारी के कारण पूर्व में निधन हो चुका था। अत: पहले से उनके तीन बच्चों का लालन-पालन भी कमला देवी जी ने बढ़े ही छाया से किया। सामय बीतने के साथ-साथ कमला जी के स्वयं के भी बच्चे हुए। इनका भी लालन-पालन व शिक्षा कमला देवी जी ने बढ़े ही अधि के दम से किया। चूँकि वह स्वयं अनन्त थी परंतु अपने बच्चों को उन्होंने बहुत अधि की शिक्षा प्रदान की। इनका एक बेटा वर्तमान में सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग में बतौर ड्रामा निरीक्षक के पद पर तैनात हैं व एक बेटा भाषा कला व संगीत प्रभाग में बतौर कलाकार सेवानिवृत है।

अपनी विलक्षण प्रतिभा के कारण ही उन्हें 1955 में आळकावाणी शिमला की स्थापना के उपलक्ष्य में मंगल गायन हेतू आमंत्रित किया गया। लोक गायन के क्षेत्र में वह प्रथम महिला कलाकार थीं जिन्होंने अपने क्षेत्र के लोक संगीत के साथ ही साथ अपना भी एक अहम मुकाम बनाया। शुरुआती समय में आळकावाणी शिमला का केंद्र वर्तमान विधानसभा परिषद में होता था। जब भी कमला रानी कार्यक्रम प्रस्तुति के लिए कहां जाया करती थीं तो केंद्र निदेशक महोदय स्वयं उनके स्वागत हेतू खड़े रहते थे।

उनकी प्रतिभा का आभास स्वत: ही इससे हो जाता है।

चूँकि तत्कालीन समय में मनोरंजन का एक अहम व प्रसिद्ध साधन रेडियो हुआ करता था। अत: लोगों के लिए रेडियो से कार्यक्रम सुनना एक सुहावना व मनोरंजक अवसर हुआ करता था। अत: इस प्रकार कमला रानी जी के गाए गीतों को सुनने के लिए लोग बहुत उत्साहित रहते थे।

कमला रानी जी के विषय में बतते हुए उनके सुपुत्र कहते हैं कि आजकल रेडियो में गीत की रिकॉर्डिंग नए कलाकार बार-बार करते हैं। परंतु जब उनकी माता जी ने पहली बार रेडियो से गीत गाया था तो उसका सीधा प्रसारण हो रहा था। यह कमला रानी जी की लोकगाथियों के स्तर को स्वत: ही परिलक्षित करता है।

हिमाचल लोक संगीत में एक नए युग की शुरुआत करने व भावी महिला कलाकारों के लिए एक मिसाल कामयाब करने के लिए एक मिसाल कामयाब करने के लिए एक मिसाल कामयाब करने के लिए एक मिसाल कामयाब करने के लिए 87
भी। उनकी इसी विकास प्रतिमा का प्रस्तुतिकरण भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. 
राजेन्द्र प्रसाद जी ने भी देखा—सुना, सराहा व इसके लिए उन्हें सम्मानित भी किया। 
हिमाचल प्रदेश के प्रथम मुख्यमंत्री डॉ. यशवंत सिंह परमार कमला रानी की 
लोकगाथिकी का बहुत सम्मान करते थे व उन्हें अपने जैसे कलाकार बनाने के लिए 
प्रोत्साहित भी करते थे। 

विमिन्न समानांकों के साथ—साथ 1981—1982 के वर्ष में आकाशवाणी कलाकार 
संघ ने उन्हें श्रेष्ठ लोकगाथिका के समान से तत्कालीन मुख्यमंत्री ठाकुर राम लाल जी 
के हाथों से सम्मानित करवाया था। साथ ही इसी वर्ष राज्यपाल (तत्कालीन) महोदय ने 
भी भाषा कला विभाग की तरफ से श्रीमती कमला रानी जी को सम्मानित किया था। 

अपने संगीत सफर के दौरान विस्तिर उतार—चढ़ावों के साथ—साथ कमला रानी 
जी ने हिमाचल लोकसंस्कृति को महत्वपूर्ण ऊंचाईयों पर पहुंचाया। आज भी 
लोककलाकार उनके गाये गीतों से प्रेरणा लेकर अपनी कला को निखारते हैं। 

विद्या के विद्यार्थियों के अन्तर्गत जीवन यात्रा के समापन की कझी में कमला रानी 
जी के जीवनचर्चा को प्रियाम लगा जब 26 नवंबर 1989 ई. को उनका शाशीर पंचमूत्तों में 
समाहित हो गया। परन्तु संगीत जगत में आज भी उनकी स्वरलहरियाँ नये कलाकारों 
के पथ—प्रदर्शन में प्रेरणा देते हैं। उनके जीवन के अन्तिम पलों के 
बारे में बताते हुए उनके सुपुत्र विजय छावड़ा जी कहते हैं कि मृत्यु के आठ दिन पहले 
उन्होंने All India Radio से अपना अन्तिम गीत भी Record किया था। वो शामी कपूर 
(हिन्दी फिल्म अभिनेता) और गजल गायक गुलाम अली जी की बहुत बड़ी प्रशंसक थी। 
अल: जीवन के अन्तिम पलों में उन्होंने गुलाम अली की गजल सुनी तब अपने स्वाधीन 
को बोले। 

श्री विजय छावड़ा जी बताते हैं कि यह वाक्या उन्होंने एक बार ज़िंदीनी नेहा 
(सोलन में) में गुलाम अली जी को सुनाया जो उस समय कार्यक्रम प्रस्तुत करने आए 
था तथा साथ ही उनसे अपनी माता जी की अन्तिम पलों में सुनी गई उनकी गजल
सुनाने की फरमाइश की। तो गुलाम अली जी ने कहा कि "मैं हमेशा शास्त्रीय संगीत के समय सिद्धांत के अनुसार ही अपना गजल गायन करता हूँ। परंतु मेरी कुछ ऐसी गजलें भी हैं जिनके स्वर व शब्द सदाबहार हैं और आपकी फरमाइश की गई गजल भी इसी प्रकार की हैं। इसलिए मैं इसे अवश्य गाऊंगा।" यह एक महान गायक का एक महान लोकगायिका की उनके प्रति निश्चल सम्मान भावनाओं का सम्मान था।" ।

1 साशांत विवेक – लोकगायिका स्वर कमला रत्नी छाबड़ा जी के हुपुन्न त्रिजय छाबड़ा जी।
3.14 श्रीमती उमा कौशल

“हिमाचल प्रदेश की प्रसिद्ध लोकगायिका श्रीमती उमा कौशल जी का जन्म एक पारम्परिक संगीत घराने में जिला सोलन की तहसील अर्की के एक गांव मांजू में 15 दिसेम्बर 1975 को हुआ। इनके पिता स्व. श्री दिला राम कौड़ल जी शास्त्रीय संगीत के काफी अच्छे कलाकार थे। तत्कालिन रियासती काल में वे दरबारी संगीतकार रहे। उन्हें वायलिन, सितार, तबला व शहनाई इत्यादि संगीत वाद्यों के वादन में भी पारंपरिक हासिल थी। उमा जी की माता श्रीमती सिंतामणि कौड़ल जी भी शास्त्रीय संगीत के साथ-साथ लोकगायिकी में काफी निपुण रही हैं। साथ ही दोल, नगाड़ा, तबला व ढोलक आदि वाद्य वादन में निपुण रही हैं। ऐसे पारंपरिक व सांगीतिक रूप से समृद्ध घराने में जन्म के कारण खासगी ही था कि उमा जी का रूझान संगीत की तरफ हुआ। परिवार में बड़े बहन उमा जी के एक छोटे भाई नमन कौड़ल जी हैं। जोकि वर्तमान में हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय में तबला वादक के रूप में कार्यरत हैं।

श्रीमती उमा कौशल जी के सांगीतिक जीवन की यात्रा का श्री गणेश होश सम्मानने के साथ ही चर्चा में ही हो गया था। अपने माता-पिता के आचरण की छत्रा-छाया में बेटी उमा की किलकारियाँ धीरे-धीरे स्वरलहरियाँ में बदलने लगी। अपने माता-पिता के सानिध्य में उमा जी ने सांगीतिक बारीकियाँ की शिक्षा ग्रहण की। उमा जी ने डॉ. अनन्त चौधरी, डॉ. रमस्वरुप शाहिद, बलदेव जी (वायलिन वादक, सूचना एवं अन संपर्क विमान), श्री के.एल. सहगल जी आदि से भी शास्त्रीय संगीत की बारीकियाँ की शिक्षा ग्रहण की। इसके अलावा इन्होंने स्कूली पढ़ाई के अन्तर्गत दर्शनी कक्षा के अलावा संगीत विषारद में चुनौत वर्ष का भी प्रमाण पत्र हासिल किया है।
समय के निर्णय प्रवाह में श्रीमती उमा कौशल निर्णय अपने संगीत को निर्धार
प्रदान करती रहीं। इसी दौरान वर्ष 1975 में उमा जी का विवाह सोलन जिला के
रामसार में स्व. श्री ओम प्रकाश तनवर से सम्पन्न हुआ। जो कि स्वयं एक उमदा
कलाकार थे। इस तरह कलाकार पति का साथ मिलने से उमा कौशल जी की कला
को और अधिक प्रसारित मिला। समय बीतने के साथ ही उमा कौशल को तीन बेटियों
की प्राप्ति हुई। वर्तमान में उनकी दो बेटियों की शादी हो चुकी है वह सबसे छोटी बेटी
नताशा स्नातक द्वितीय वर्ष की छात्रा है। साथ ही साथ खण्डन्या महाविद्यालय शिमला
से कल्पक नृत्य कला का भी प्रशिक्षण प्राप्त कर रही है।

सामाजिक जीवन कई प्रकार के सांघर्ष्य का जनक माना जाता है। जिसके
अन्तर्गत मनुष्य अपने जीवन अर्थित के स्थायित्व के लिए निर्णय परिस्थितियों व
जिम्मेदारियों से जूझता रहता है। इसी कहां में 70 के दशक के दौरान उमा कौशल जी
के जीवन में भी ऐसा समय आया जब शासीरिक अर्थव्यवस्था के कारण इन्हें तीन बार
शाय चिकित्सा करवानी पड़ी। जिसके कारण श्रीमती उमा कौशल जी का जीवन
अत्यन्त प्रभावित हुआ। परन्तु फिर भी इन्होंने अपनी जीवन साधन का परिवर्तन देते हुए
अपने आप को इस दुःख से उदार ही लिया। इसके उपरांत विवाहित जीवन के दौरान
इन्हें अपने पति के साथ ही जनसम्पर्क विभाग में बतौर कलाकार कार्य करने का
अवसर मिला। इस दौरान इनको एक कलाकार के तौर पर प्रदेश के साथ-साथ देश
स्तर पर प्रसिद्धी मिली। परन्तु विवि ने कुछ समय तक ही जीवन संघर्ष को विराम दिया
था। यथा वर्ष 2006 में पति के प्रभावित के कारण एक अत्यंत संघर्ष उमा जी के समक्ष
खड़ा हो गया। परन्तु पति इस विभाग अवस्था में ज्यादा समय जीवित नहीं रह पाए व
श्रीमती उमा जी को छोड़ कर सदैव के लिए परम्पराम को चले गए। वर्तमान में श्रीमती
उमा कौशल जी इस दुःख से उबरने में प्रयासरत हैं व अपनी छोटी बेटी नताशा के
साथ अपना जीवन यापन कर रही हैं।
सांस्कृतिक जीवन के दौरान प्रमुख मंचों पर अपनी कला का प्रस्तुतिकरण करने का विविधता अवसर श्रीमती उमा कौशल जी को तब मिला जब 1971 ई. में इन्होंने आकाशवाणी में अपनी स्वर परिश्लेषण दी और वर्ष 1976 ई. से निरंतर आकाशवाणी से अपने लोकगीत गाने का सुनहरा दौर प्रारंभ हुआ। तब से इन्होंने कई ऐसे लोकगीत गाए जो लोगों को बहुत पसंद आए और उमा कौशल जी के नाम और कला को अत्यन्त प्रसिद्ध बनाई। इसी दौरान 10 अगस्त 1981 ई. में Public Relation Department में बतौर कलाकार नियुक्ति प्राप्त हुई जिसके कारण श्रीमती उमा कौशल जी की प्रतिमा प्रदेश से निकलकर देश भर में फैलने लगी। वर्ष 1997-1998 के दौरान उमा जी ने श्री डेविड पाल जी के साथ एक टेलीफिल्म फिल्म में कुंजु-चंवलो नामक प्रसिद्ध गीत भी गाया।

इसी वर्ष इन्होंने 'इंक मंडु' कांगड़े' नाम के स्टूडिओ में भी स्वर दिया। वर्ष 2000 ई. में इन्होंने स्व. इंद्रपल छावड़ा और स्व. गोपाल शरण जी के साथ जय मो अथ नामक कैसेट में भी गाया। इस प्रकार श्रीमती उमा कौशल जी का सांस्कृतिक जीवन निरंतर अग्रसर बना हुआ है। वर्तमान में श्रीमती उमा कौशल जी जन सम्मान विभाग, छोटा शिमला, हिमाचल प्रदेश में 1981 ई. से कार्यरत हैं।

अपने सांस्कृतिक जीवन के दौरान श्रीमती उमा कौशल जी ने बहुत से प्रसिद्ध कलाकारों के साथ मंच साज़ा किया जिनमें स्व. इंद्रपल छावड़ा, स. गोपाल शरण, समस्तर शरण, बसन्ती देवी, मन्त्रु भारद्वाज, पं. ज्योता प्रसाद, स्व. रौशनी जी, कृष्णा छावड़ा इत्यादि शामिल हैं। इसके अलावा इन्होंने विभिन्न भाषाओं में सैया, मणी ,शिवाजी, जय चंद्र, रामचंद्र व उदयपुरि, गौतम शंकर, एका सारमारिक, भोजपुरी, संगीत, बलिया, राजस्थान, गुजरात, बिहार और उत्तर प्रदेश इत्यादि में अपने सफल कार्यक्रम प्रस्तुत किए। इसके अलावा इन्होंने राज्य से बाहर तमिल, त्रिपुरा, बंगाल, पश्चिम बंगाल और दिल्ली आदि राज्यों में भी कार्यक्रम प्रस्तुत किए हैं।
अपनी प्रसिद्धि व अपनी सांगीतिक प्रतिमा हेतू श्रीमती उमा कौशल ने अपने स्वयं
के अंदाज, अपनी अथवा मेहनत, हालात से लड़ने की दृढ़ इच्छाशक्ति, विभिन्न
पाकिस्तानी गायकों को सुनना, आशा भोसले जी को सुनना, शास्त्रीय संगीत की शिक्षा
व विभिन्न कलाकारों के आर्थिक व सहयोग को जिम्मेदार मानती है। साथ ही वह
कहती है कि नए कलाकारों को संगीत की विभिन्न शिक्षा ग्रहण करके ही संगीत कला
का प्रदर्शन करना चाहिए। जिससे कि विभिन्न सांस्कृतिक व सांगीतिक बारीकियों को
जानने का तार्किक ज्ञान प्राप्त हो सके।"1

1 सांस्कृतिक विवरण - लोक गायिका श्रीमती उमा कौशल
3.15 श्रीमती युवा शर्मा

"श्रीमती युवा शर्मा जी का जन्म 24 मई 1967 को जिला सोलन के एक गांव सत्त्वा (डाकखाना दूरी) में एक ब्राह्मण परिवार में हुआ। इनके पिता स्व. श्री ओम प्रकाश शर्मा व माता श्रीमती सरला शर्मा जी हैं। परिवार में बड़ी बेटी के रूप में युवा जी का जन्म होने के साथ-साथ युवा जी के तीन बच्चों व दो बहिश और हुए। अत: पूरे परिवार में युवा जी का बचपन बड़े लाड़-प्यार से बीता। संगीत के प्रति प्रेमण इन्हें अपने पिता जी से मिली जो कि उस समय संगीत प्राथ्यक श्री अनंत चौधरी के साथ रहते थे। जहां संगीत के प्रति उनका रूख जान हुआ। संगीत से जुड़ने का एक कारण यह था कि युवा जी की बचपन से ही आंखों की रोशनी बहुत कमजोर थी। अतः डाक्टर की सलाह से परिवार वालों को रूढ़ी पढ़ाई बन्द करनी पड़ी। इसी कारण से भी पिता व परिवार वालों ने बेटी युवा को संगीत शिक्षा हेतु प्रोत्साहित किया। आवाज में 'आकर्षण के कारण भी पिता जी ने युवा को शास्त्रीय संगीत की विध्वंत शिक्षा हेतु प्रोत्साहित किया। धीरे-धीरे बचपन बीता और 1997 ई. में युवा जी का विवाह जिला सोलन के ही बागेंदू नामक स्थान पर श्री सीता राम शर्मा जी के साथ सम्पन्न हुआ। युवा जी के प्रति रवंग भी संगीत से जुड़े हुए हैं व उन्होंने सोलन में एक शास्त्रीय संगीत अकादमी भी चलना रखी है जो हर वर्ष शास्त्रीय संगीत प्रतियोगिता का आयोजन करती है। वर्तमान में युवा जी की कोई वेटियां व एक वेटा है जो भी संगीत के क्षेत्र से जुड़े हुए हैं।

हांकि आंखों की कमजोरी की वजह से युवा जी की रूढ़ी पढ़ाई तो नहीं हो पाई परंतु शास्त्रीय संगीत की विध्वंत शिक्षा इन्होंने 1 मार्च 1984 से लगभग 17 वर्ष की आयु में प्रागन करना आरम्भ कर दी थी। युवा जी ने शास्त्रीय संगीत की शिक्षा श्री
सहगल जी से (केंद्रीय विद्यालय में संगीत अध्यापक) से लगभग पांच वर्ष तक ग्राहक की। इसके अलावा युवा जी ने डा. रामस्वरूप शाहिदल (प्रोफेसर संगीत विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला) जी से भी शास्त्रीय संगीत की शिक्षा ग्रहण की है।

हर व्यक्ति के जीवन में एक संघर्ष हमेशा रहता है। युवा शर्मा जी के जीवन में संघर्ष बचपन से ही शुरू हो गया था। आँखों की कमजोरी की वजह से इन्हें अपनी स्कूली शिक्षा बन्द करनी पड़ी। परन्तु कहते हैं 'भवान एक दरवाजा बन्द करता है तो चार और खोल देता है।' इसी प्रकार युवा जी के जीवन को भी संगीत के रूप में एक नई दिशा मिली। पिता के प्रोत्साहन से इन्होंने शास्त्रीय संगीत सीखना आरम्भ कर दिया। अपनी शारीरिक कमजोरी से हट कर इन्होंने अपनी आवाज को एक नई पहलावान देने के लिए दुर्दंगाल होकर संगीत को आत्मसात करना आरम्भ कर दिया। अन्य लोक गायिकाओं की भांति इन्हें किसी भी प्रकार के सामाजिक, पारिवारिक या आर्थिक विरोधाभास का सामना अपने जीवन में नहीं करना पड़ा। अपनी तिथियाँ फ़ुली से ऊपर उठकर समाज व परिवार ने इन्हें हमेशा आगे बढ़ने को ही प्रोत्साहित किया।

युवा जी के सांस्कृतिक जीवन की शुरुआत यू। तो संगीत के क्षेत्र में पदार्पण के साथ ही हो गई थी। सबसे पहले मंच के रूप में इन्हें स्थानीय रामलीला मंच पर गाने का अवसर मिला। जिसमें इन्हें के बाचा श्री हरिकृष्ण शर्मा जी ने इनका सहयोग दिया। युवा जी के बाचा स्वयं लोक गीत, भजन आदि रचनाएं करते थे। अतः इनकी रचनाओं को इन्होंने मंच पर प्रस्तुत किया। रेडियो में इन्होंने 1986-1987 ई. में सुगम संगीत गाना आरम्भ किया। इसके अलावा इन्होंने कई लोक गीत भी गाए। अपने बाचा जी की कई रचनाओं को इन्होंने रेडियो से गाया। 1990 के दशक में इन्होंने जालूचर दूरदर्शन से कार्यक्रम देना आरम्भ किया। क्योंकि हिमाचल में उस समय दूरदर्शन केंद्र नहीं था। इस प्रकार इन्होंने जालूचर, दिल्ली आदि केंद्रों से कार्यक्रम प्रस्तुत किये। 1996-1997 ई. में ये बताया Casual Artist Public Relation विभाग में कार्यरत रही परन्तु वैश्विक जीवन की जिम्मेदारियों के कारण इन्हें अपनी सेवाएं देना बन्द करना
फ्ला। बाद में इस्लामी डी.एल. एलॉन, डी.ए.वी. टूटू, शिमला, केन्द्रीय विद्यालय सुबाहु में क्रौर संगीत अत्याधुनिक भी कार्य किया है। 21 अप्रैल 2008 को इस्लामी डी.एल. एलॉन में जिला लोक सम्पर्क विभाग में बातचीत गायकी सेवा हेतू चुना गया। इसी कड़ी में 01-08-2008 को इस्लामी नाट्य निरीक्षक के पद पर तैनाती मिली। वर्तमान में युवा शामी जी सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग सोलन में नाट्य निरीक्षक के पद पर कार्य कर रही हैं।

अपने सांगीतिक जीवन के दौरान युवा शामी जी ने कई नामचीन संगीत हस्तियों के साथ कार्यक्रम प्रस्तुत किए। जिनमें प्राचीन भीमसेन शामी जी (संगीत विभाग हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला), डॉ. राम स्वरूप शांकिल (संगीत विभाग हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला), श्री बदूम जी, इंद्रपाल छाबडा, श्रीराम शर्मा (संगीतकार, आकाशवाणी शिमला), श्रीमती कृष्णा भीमसेन, शान्ति बिष्ट, श्यामाला लोमर, उमा कौशल, भूवनेश्वरी तनदार आदि नामचीन कलाकार शामिल हैं। इसके साथ-साथ युवा शामी जी ने एस. शारी जी (आकाशवाणी, शिमला) जैसे प्रसिद्ध हस्तियों की रचनाओं के साथ अपने चाचा द्वारा रचित गीतों को अपनी मधुर आवाज में अमरता प्रदान की है।

विकाश लोकगीतों के अन्तर्गत युवा शामी जी ने प्रचलित पारम्परिक लोकगीतों जैसे, विवह गीत, भ्याई(जन्म संस्कार), नैली, गांगी, नाटी आदि को अपनी मधुर आवाज प्रदान की। इसके साथ-साथ युवा जी ने स्वयं रचित गीतों को भी गाया। संगीत के क्षेत्र में इतनी अद्वैत प्रतिभा होने का श्रेय युवा शामी जी अपने पूर्व सुगुरु श्री सहगल जी को देती है। इन्हीं की पीरणा व मार्ग दर्शन के कारण युवा शामी जी संगीत के क्षेत्र में अपने आय को स्थापित कर पाई है।"
3.16 श्रीमती जयवत्ती चौहान

"श्रीमती जयवत्ती चौहान का जन्म वर्ष 1964 ई. में जिला सिमरौ की तहसील राजगढ़ के गांव सराणा (दाहन) में हुआ। इनके पिता श्री मनीराम 60 व 70 के दशक के दौरान आकाशवाणी से सिमरौ लोकगायन किया करते थे। इनकी माता स्व. श्रीमती भालू देवी जी थीं। परिवार में जयवत्ती जी की दो बहनें और दो भाई हुए। पिता जी के लोकसंगीत में जुड़े होने के कारण ही इन्हें भी लोक संगीत से जुड़ने की प्रेमणा मिली। बचपन से ही बेटी जयवत्ती की स्वरलहरियाँ हिलारे मारने लग गई थीं। अपने पिता व अन्य कलाकारों को रेडियो के माध्यम से सुन-सुन कर जयवत्ती जी ने भी स्वराम्या प्रारम्भ कर दिया था।

विधिवत लोक संगीत के क्षेत्र में पदार्पण के प्रणेता के रूप में वर्ष 1983 ई. को जीवन साथी के रूप में पति श्री नरेश चौहान जी से जयवत्ती चौहान जी का विवाह सम्पन्न हुआ। चूँकि इनके पति हिमाचल पुलिस में कार्यरत हैं। परंतु फिर भी वह स्वयं एक मंदे हुए लोकगायक भी हैं। पति ने अपनी पत्नी की प्रतिमा को पहचान कर इन्हें अपनी प्रतिमा को मंच पर लाने हेंवू प्रतिसाधित किया। पति के सहयोग के कारण जयवत्ती चौहान जी ने विधिवत अपनी लोकगायकी का मंचन आरम्भ कर दिया। परिवार के रूप में जयवत्ती जी को दो बेटों व एक बेटी की सीमात्र प्रभु से मिली। माता-पिता के सांगीतिक सरकारों के साथियों में बच्चों की रुचि भी संगीत के प्रति धीरे-धीरे बढ़ने लगी। वर्तमान में जयवत्ती जी के एक सप्तदिन हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय से संगीत में पी.एच.डी. कर रहे हैं। वहीं बेटी भी संगीत में ही एम.फिल. कर चुकी हैं। एक बेटे जो कि हिमाचल प्रदेश सचिवालय में सेवारत हैं, भी एक अच्छे लोकगायक हैं पिता श्री मनीराम.
साम के संगीत संस्कार व पति के सहयोग से आज जयवन्ती जी का पूरा परिवार संगीत कार्यक्रमों में बढ़-चढ़कर भाग लेता है।

हिमाचल लोकसंस्कृति में एक अहम मुकाम हासिल कर चुकी जयवन्ती चौहान ने अपने पिता व पति से प्रेरणा पाकर व स्वयं की सहजज्वरति, अथवा परिश्रम से ही यह सब प्राप्त किया है। हिमाचल के हर क्षेत्र में अपनी प्रतिमा का जौहर दिखा चुकी प्रसिद्ध हिमाचली लोकगायिका जयवन्ती चौहान संगीत की दुनिया में कोई नया नाम नहीं है।

अब तक कई राज्यों में अपनी प्रतिमा का जादू विख्यात चुकी जयवन्ती हिमाचली ही नहीं पंजाबी व हिन्दी गीतों को भी सहसू अन्दाज में गाती हैं। जयवन्ती जी ने कुल्लू दक्षिण, रेपुका मेला, मिंजर, जनजातीय उत्सव केलांग व काजा, रिकाङपिठों, सुजानपुर की होली, धर्मशाला, शिमला ग्रीष्मोत्सव लयी (रामपुर), रोहड़ मेला सहित प्रदेश के कई बड़े मंचों पर अपनी सिरमोरी संस्कृति की एक अमिट छाया बनाई है। साथ ही प्रदेश से बाहर भी पंजाब व अमृतसर में अपने कला के जादू से श्रोताओं को मनोमुक्त किया है।

उनकी इसी प्रभावशाली प्रतिमा के कारण इनके गृह क्षेत्र व अन्य क्षेत्रों में इन्हें सामाजिक रूप से काफी सम्मान, प्रसिद्धि व प्रोत्साहन मिला है।

हिमाचल प्रदेश की संगीतिक प्रतिमाओं के लिए अहम मंच आकाशवाणी में इनकी लोकगायिकी की शुरुआत 1998 ई. में हुई जब उन्होंने अपने पति के साथ मिलकर Singing Audition दिया। परस्पर उस समय केवल जयवन्ती जी ही स्वर परीक्षा में सफल हो पाई थी। बाद में इनके पति ने भी 1999 ई. में स्वर परीक्षा उत्तीर्ण कर ली। तब से जयवन्ती जी आकाशवाणी से सिरमोरी लोकगीतों को प्रसारण करने का आरंभ हुई है। इसके अलावा जयवन्ती जी दूरदर्शन से भी अपने कार्यक्रम प्रस्तुत कर चुकी हैं।

अपनी लोकगायिकी के प्रेरणा स्त्रोत चुकी प्रसिद्ध संगीत हसिल श्री कृष्ण अकाल सहगल व डॉ. राम स्वरूप शाहिद जी का मानती हैं। जिन्हें सुन-सुन कर उन्होंने अपनी लोकगायिकी का और ज्यादा निखार प्रदान किया।
सांगीतिक जीवन की उपलब्धियों के अन्तर्गत जयवन्ती चौहान जी को 1998 ई. में रेडियो से गाने का अवसर मिला। दूरदर्शन के माध्यम से भी इन्हें काफी स्थापना मिली। साथ ही सिरमोर के एक स्थानीय निवासी ठाकुर जारी राम जी की प्रेरणा से इन्होंने कैसेट्स आदि के माध्यम से जन-जन तक अपनी आवाज पहुंचाई। लोक संगीत के क्षेत्र में इनके अभूतपूर्व योगदान के लिए इन्हें सामर के स्टवीवल शिमला में सरकारी स्तर पर सम्मानित किया गया।

अपनी पहली कैसेट के रूप में इन्हें ‘नया पंछी’ से काफी प्रसिद्धी मिली। इसके बाद इन्होंने नई उड़ान, गरजता बादल, आखटी मिलाई जा, नया बस्तर, हंगामा इत्यादि काफी सफल कैसेट्स में अपनी आवाज दी। अपनी पहली कैसेट ‘नया पंछी’ में गाए अपने स्थानीय देवता (देव विजंक) के गुण गान से इन्हें इतनी प्रसिद्धी मिली कि जब वो अपने गान गाए तो दूर-दूर से लोग मिलने हेतू इनके पास पहुंचे। वर्तमान में जयवन्ती चौहान अपने परिवार के साथ अपनी संगीत दल के माध्यम से विभिन्न मंचों पर निरंतर अपनी कला का प्रचार कर रही हैं।

जयवन्ती चौहान घाड़ी गानों में पॉप म्यूजिक को मिलाकर एक नया रूप देने के हक में नहीं हैं। उनका मानना है कि हिमाली संस्कृति को बिगाढ़ा नहीं जाना चाहिए। जयवन्ती जी ने पहाड़ी भाषा के अलावा किन्नोरी, नेपाली और अन्य भाषाओं में भी गीत गाए हैं। इनका मानना है कि पारंपरिक वाद्य यंत्रों की धुनों के साथ ही पहाड़ी शब्दों का मेल ही असली आनंद देता है।"
3.17 श्रीमती विद्या देवी

"पारंपरिक लोकगाथाओं में श्रीमती विद्या देवी जी का नाम काफी समाने के साथ लिया जाता है। विद्या जी का जन्म 11 दिसंबर, 1947 ई. को जिला सिरमौर के एक गांव भड़ोली (रासु मंदिर) में एक पारंपरिक संगीत घराने (तुरी) में हुआ। इनके पिता श्री कली राम व माता श्रीमती सुन्दरी देवी भी पारंपरिक लोकगाथाकी व लोक कला में पारंपरिक थे। परिवार में विद्या जी के अलावा छ: माई व दो बहनें हुई। इनके दादा श्री इसरु राम व दादी श्रीमती चुरी देवी भी अपने क्षेत्र में जाने माने कलाकार रहे। संगीत घराना होने के कारण विद्या देवी जी का संगीत में पदार्पण रमणकीर्तिक ही रहा। संस्कार से भी विद्या को विद्या देवी ने सहज ही आलसत कर गायन, वादन व नृत्य करना शुरू कर दिया था। अपने माता-पिता के साथ विभिन्न सामाजिक-सांस्कृतिक आयोजनों में सम्मिलित होने का अवसर अक्सर इन्हें मिल जाता था। इसके अलावा इन्होंने संगीत की विभिन्न शिक्षा अपने गुरु श्री श्रेणू राम जी घूंड़ा टियोगाने भाले से प्राप्त की। इनके गुरु इन्हें माता जी के रिस्ते में मामा थे। इनके गुरु ने भी सबसे बूढ़ा खाने जी से शास्त्रीय संगीत की शिक्षा ग्रहण की। अत: शास्त्रीय संगीत की बारीकियां इन्होंने बचपन से ही गुप्ती जोनों से सीखी। पारिस्थितिक रूप से भी इन्होंने अपने दादा-दादी व माता-पिता जी से भी संगीत की शिक्षा ग्रहण की। संगीत घराना होने के कारण इनके माई-बहनें भी अच्छे कलाकार हैं।

संगीत शिक्षा के अलावा श्रीमती विद्या जी ने आठवीं कक्षा तक की शिक्षा भी ग्रहण की। लेकिन उस समय बेटियाँ की पढ़ाई का इतना प्रचुर नहीं था। अतः स्कूली शिक्षा अधूरी ही रही। स्कूली जीवन के कुछ पहलुओं का जिक्र करते हुए विद्या जी बताती है कि स्कूल के दौरान वो हमेशा ही क्लास मोनिटर रही। अध्यापकों के
प्रोत्साहन के कारण स्कूल में सांस्कृतिक कार्यक्रम में विद्या जी ने स्वयं तो भाग लिया ही साथ में वह अन्य छात्रों को गीत व नृत्य भी सिखाया करती थीं। अत्यापकों के प्रोत्साहन के कारण भी इन्हें संगीत के क्षेत्र में अपना एक विशेष मुकाम हासिल करने की इच्छा पनने लगी।

समय परिवर्तन के साथ ही विद्या देवी युवावस्था तक पहुंची तो उनका विवाह 1970 ई. में सिरमौर के ही गांव दांहन में श्री सोहन सिंह जी के साथ सम्पन्न हुआ। इनके पति स्वयं ढोलक वादक हैं। अतः संगीतकार पति के सानिध्य में विद्या जी का जीवन सांस्कृतिक रूप से निरंतर क्रियाशील ही रहा। परिवारिक जीवन में विद्या जी को एक पुत्र की प्राप्ति हुई लेकिन बचपन में ही बच्चे का आकस्मिक निधन होने के कारण पति-पत्नी दोनों को ही गहरा आघात पड़ा। इसके उपरान्त उनकी कोई सन्तान नहीं हुई। इस विषय में बारतालाप करते हुए विद्या जी की आंखें भर आई। वर्तमान में विद्या जी ही अपने पति के साथ एक-दूसरे का सहारा बन कर जीवन यापन कर रहे हैं।

सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन के सफर में विद्या जी को किसी भी विशेषाधारी का सामना नहीं करना पड़ा। चूंकि विद्या जी संगीत घराने से सम्बन्धित हैं। अतः इन्हें समाज में विशेष समान व प्रोत्साहन ही मिला। संगीत की विशेषता शिक्षा के कारण इन्हें संगीत के शास्त्रीय पक्ष की बारीकियों को भी समझने का महत्वपूर्ण अवसर मिला। अतः इन्होंने लोकगायन में तीन ताली नाटी, राग आचारित लोकगीत, शास्त्रीय गायन समय इत्यादि के विषय को सफलता पूर्वक आत्मसात कर लिया। इसके अलावा इन्होंने तबला, ढोलक, शहनाई, छायानियां, आदि के भी सफल वादन में नियुक्ति प्राप्त की। अपनी सांस्कृतिक विविध विशेषज्ञाओं के अलावा विद्या देवी जी ने पंचाग गणना इत्यादि जटिल विषय हेतु भी शिक्षा ग्रहण की। आद्यात्मिक जीवन के प्रति इनका समर्पण इनकी कला के भावात्मक पक्ष से साफ तौर पर परिलक्षित होता है। संतान सुख से दिहीन जीवन की मायूसी ने इनकी आवाज को और प्रभावशाली भावों से सराबार कर दिया।
आज भी विद्या जी जब किसी उदासी भरे भाव गीत को गाती हैं तो उनके अन्तर मन की तड़प का आमास हमें स्वतः ही हो जाता है।

संगीत में ऐसी विलक्षण प्रतिमा के कारण ही इन्हें 1970 के दशक से निरन्तर 2000 ई. तक रेडिया से गाने का सुनहरा अवसर मिला। इसके माध्यम से इन्होंने प्रदेश ही नहीं अपितु देश के कई हिस्सों में अपनी प्रतिमा की छाप छोड़ी। विद्या देवी जी ने अपने गूह क्षेत्र सिरमोर के अलावा दिल्ली, जालन्धर, शिमला, बिलासपुर, मण्डी, कुल्लू, राजगढ़, नाहन, सराहन, टियोग आदि क्षेत्रों में विभिन्न मंचों पर अपनी कला के जलवे फिरे। अपनी संगीतिक यात्रा के दौरान इन्होंने कई प्रसिद्ध कलाकारों जैसे- कृषण लाल सहगल, परसराम चुरुवाड़ा वाले (हारसोनियाम वादक), लखी राम सलीम, बसन्ती देवी, आदि के साथ मंच साझा किया।

संगीत की इस जीती जागती विरासत को इनके संगीत व संस्कृति के क्षेत्र में अमृतपूर्व योगदान के लिए पश्चिम स्वतन्त्रता सेनानी कल्याण समिति ने इन्हें 22 अक्टूबर 2010 को ताम्र पत्र से सम्मानित किया। साथ ही प्रशासित पत्र में इनके सम्मान में कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार लिखीं-"विद्या देवी जी ने बचपन से ही संगीत एवं नृत्य में महारत हासिल कर ली थी। इन्होंने इस कला को प्रसिद्धि दिलाने के लिए गांव-गांव जाकर प्राचार-प्रसार दिलाया तथा लोकगीतों को क्षेत्र में ही नहीं अपितु प्रदेश स्तर पर भी पहचान दिलाई। 1970 में वे वैद्य सूरत सिंह जी द्वारा गठित "पहाड़ी कलाकार मंड" की सदस्य बनी तथा आकाशवानों के माध्यम से देश-प्रदेश में पहाड़ी कला को पहचान दिलाई। बिद्या देवी जी जहां आवाज की घनी हैं वहीं साज पर भी ये अच्छी फक्कड़ रखती हैं। सुनाम संगीत के साथ-साथ इन्हें शास्त्रीय संगीत की भी पूरी जानकारी है।"

उपरोक्त पंक्तियों से स्वतः ही हमें विद्या देवी जी की विलक्षण प्रतिमा की जानकारी प्राप्त हो जाती है। संगीत के प्रति अपने समर्पण को विद्या देवी जी कुछ ऐसे बताने की आवश्यकता है कि "संगीत एक पंड़ की भावति है, कला को जड़ से सीखें, स्वर का
झान जरूरी है।" संगीत के प्रति इस गहरे लोच व भावना के कारण ही सिरमोरी लोकगान में विद्या देवी जी का नाम बड़े सम्मान के साथ लिया जाता है।"